॥ श्रीमतेऽर्हतेनमः ॥

॥ खुर्जा शास्त्रार्थ का पूर्वरंग ॥

युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्यः परिग्रहः

ये पुस्तक समस्त धर्मानुरागी भाइयों के सत्यासत्य विवेकार्थ

जयनरायन उपमन्त्री नं० १ जैनसभा खुर्जा ने

छपाकर प्रकाशित किया

मिती पोष शुक्ला २ सं० १९६३

प्रथमवार ५००० प्रति

शुभं भूयात्

॥ एतदमूल्यं विजानीयात् ॥

S. S. Press Muttra

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना ॥

समस्त धर्मज्ञ गुणज्ञ विवेकियों पर विदित हो कि इस खुर्जे नगर में जो जैनधर्मावलम्बियों के साथ आर्यमहाशयों ने शास्त्रार्थ की घोषणा की थी उसका परिणाम यद्यपि उभयपक्षके नोटिसों से प्रत्येक भ्रातृसमूह निर्धारित करचुका था। परंतु निर्बल पक्ष को सबल दिखाने के लिये हमारे आर्य महाशयों ने शास्त्रार्थ के मूल रहस्य को त्याग स्वकीय प्राचीन प्रणाली के अनुसार अपने आर्य-मित्रादि कतिपय पत्रों में मनमानी गाथा कथी हा जिसका रहस्य इस पुस्तक के अवलोकन से समस्त भाइयों को ज्ञात होजाइगा। इसमें प्रारम्भ से लेकर अवसान तक सप्रमाण याथातथ्य से वृत्त लिखा जायगा जिस भाई को किंचित् भी शंका हो अत्रस्थ प्रत्येक मतानुयायी महानुभाव से पूछकर निर्णय करले। इस पुस्तक के लिखने से मेरा यही अभिप्राय है कि समस्त भाई सत्यासत्य का निर्णय कर भ्रम में न पड़ें। मैं आशा करता हूं कि यदि विवेकी भाइ जैनमतानुयायियों के और समाजी महाशयों के विज्ञापनों को मनसा दृष्टिगत करेंगे तो हमारे महाशयों के शुद्धांतःकरण रूपी ढोल की पोल खुल जाइगी और मैंभी अपना श्रम सफल समझूंगा किमधिकम्

निवेदक भ्रातृवर्गोंका कृपाकांक्षी

जयनरायन उपमंत्री नं० १ जैनसभा खुर्जा

इस शास्त्रार्थ के पूर्वरंग में आयेहुए उभयपक्षके विद्वानों क नाम

॥ जैनविद्वान ॥	॥ आर्य विद्वान ॥
न्यायदिवाकर पं० पन्नालालजी जारखी	विद्वद्वर आर्यमुनिजी लाहौर
पं० चुन्नीलालजी मुरादाबाद	श्रीमान् पं० तुलसीरामजी स्वा० मेरठ
पं० श्रीलालजी अलीगढ	पं० मुरारीलालजी सिकन्दराबाद
महोपदेशक पं० कल्याणरायजी अलीगढ	पं० मुसद्दीलाल जी मेरठ
पं० मेवाराम जी खुर्जा	पं० जमुनाप्रसाद जी दिल्ली

॥ श्रीमतेऽर्हतेनमः ॥

खुर्जाशास्त्रार्थकापूर्वरंग

———:o:———

॥ सत्येनास्तिकचिद्भयम् ॥

वाचक वृन्द इस नगर में भाद्रपद कृष्णा द्वितीया सं० १९६१ से एक जैनसभा स्थापित है जिसका वार्षिकोत्सव मिती आश्विन शुक्ला द्वितीया सं० १९६२ को सर्व आम में बड़े समारोह के साथ हुआ जिसमें अलीगढ़ निवासी पं० श्रीलालजी व पं० कल्याणरायजी आदि कतिपय जैन विद्वान एकत्रित हुए। और एकतादि विषयों पर उत्तम उत्तम व्याख्यान दिये गये। पं० श्रीलालजी ने सत्य के निर्णयार्थ आर्य महाशयों के मत का रहस्य प्रिय शब्दों में उत्तम रीति से दिखाया। बस अब क्या था। किशनलालजी मंत्री आर्य समाज (जो इस वक्त एक विशेष लांछन से लक्षित होकर खुर्जे समाज से पृथक् किये सुने जाते हैं जिसका लिखना हम योग्य नहीं समझते) जैनियों को दूध बतासा समझ झट ही तो जामे से बाहर होगये। और पट सभा मंडप के बीच में खड़े हो मंत्री जैन सभा से बोले हमको तुम्हारे पंडितों के व्याख्यान में शंका है। निवृत्त करने को समय मुकर्रर कीजिये। जैन सभा मंत्री मेवारामजी ने कहा आज शाम को ७ बजे समस्त शंका रफै कर लीजिये। किशनलालजी मंत्री आर्य समाज ने स्वीकार किया। सभा बिसर्जन होते समय उक्त मंत्री जी फिर बोले आज हमारे यहां सभा है कल का वक्त रखिये। मेवारामजीने कहा कल तृतीया को दिनके ३ बजे

बा ४ बजे रखिये किशनलालजी ने मंजूर किया। दूसरे दिन आश्विन शुक्ला तृतीया को जैन पंडित आर्य पंडितों की प्रतीक्षा करते रहे कि नियत समय पर आकर आर्य विद्वान हमारे विद्वानों के व्याख्यानों की शंकाओं को करें तो योग्य उत्तर से कृतार्थ किये जांय परन्तु आर्य महाशयों ने गत दिवस की प्रतिज्ञा को पूरी न कर आये हुए अपने विद्वानों द्वारा संस्कृत से चमचमाता हुआ एक नोटिस निर्माण करा सभा विसर्जन समय जैनियों को दे डाला। जिसकी हरफ ब हरफ नकल हम नीचे लिखते हैं वाचकवृन्द विचारें॥

ओ३म्

जैनसभा मन्त्रिन्।

न वारयामो भवतीं विशन्तीं वर्षानदि स्रोतसि जह्नुजायाः।

न युक्तमेतत्तु पुरो यदस्या स्तरंगभंगान् प्रकटी करोषि॥

अकाण्ड एव जैनमतावलम्बिभि र्भवद्भिरार्य्य सिद्धान्तोपरि मुधैव कटाक्षाणां पातोऽव्यधायीति विज्ञायि। भवदीयविज्ञप्तौ परो विषयो विज्ञापितः पुनश्च कथनेऽन्य एवाडम्बरः कतमोऽयं सुपन्थां महात्मनाम्। श्री १०८ महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामिना मुपरि कुवाच्य वर्षण मकारि भवद्भिः प्राज्ञैः। किमिदं कार्य्यं विज्ञप्त्यनुगुणं भवदनुगुणंवा। यदि मावतां हृदि शास्त्रार्थ चिकीर्षा प्रोज्जृम्भते वयं तर्हि सन्नह्यतां झटित्येव तस्मै शास्त्रार्थाय। कथंकारं बिलम्ब्यते युष्माभिः। वयं शास्त्रार्थयितुं सर्वथा सर्वदोद्यता इदानीं च विशेषतः वयं युष्माकं सिद्धान्ते शंका विधास्यामो युष्माभिरुत्तरणीयास्ताः। अथवा यस्मिन् कस्मिंश्चिद्विषये शास्त्रार्थं चिकीर्षेयुर्भवन्तस्तस्मिन्नेव विषये शास्त्रार्थेन भाव्यम्। लेखद्वारा सम्मुखे स्थित्वा वा शास्त्रार्थयितव्य मत्र किमपि वक्तव्यं नास्ति किं बहुनेति शम्।

भवदीयोत्तराभिलाषी मंत्री आर्य्य समाज खुर्जा

भाषार्थ.

हे जैनसभा के मंत्री॥

हे वर्षा में उमड़ने वाली छोटी सी नदी गंगा के प्रवाह में मिलते

हुए तुझको हम नहीं रोकते हैं परन्तु उसके आगे तुमको आंख दिखाना उचित नहीं है (भावार्थ- हे कम पढ़े आधुनिक जैनियों आर्यसमाज में मिलते हुए तुमको हम नहीं रोकते हैं परन्तु आर्य समाजको पाण्डित्य दिखाना तुम्हें योग्य नहीं है) ॥ विना प्रसंग के आप जैनियों ने आर्य सिद्धांतों पर व्यर्थ कटाक्ष किया ये हमने जाना आपके विज्ञापन में अन्य विषय की सूचनाहै और व्याख्यानमें दूसरा ही वाग्जाल है । ये सत्पुरुषों का कौनसा मार्ग है । श्री १०८ महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामीजी के ऊपर आप विद्वानोंने गालियों की बौछार करी । ये कार्य क्या आपके विज्ञापन के अनुकूल है या आप की लायकी के अनुकूल । जो आपके चित्त में शास्त्रार्थ की इच्छा उमड़ती होतो झटपट शास्त्रार्थ के लिये तयार होजाओ । क्यों तुम विलम्ब करते हो । हमलोग आर्य समाज शास्त्रार्थ करनेको हररीति से हरवक्त तयार हैं इसवक्त बहुत ज्यादे ॥ हम तुम्हारे सिद्धांत पर शंका करेंगे तुम उसका उत्तर दो या जिस विषय में आप शास्त्रार्थ करना चाहें उसी विषय में हो ॥ लेख द्वारा या सामने बैठकर चाहें जिसतरह शास्त्रार्थ करिये इसमें कुछ बोलनेको जगं नहीं है । बहुत से क्या इतिशम् ॥

आपसे उत्तर चाहनेवाला मंत्री आर्यसमाज खुर्जा

(समीक्षक) विचारिये " प्रथमग्रासे माक्षिकापातः ,, हमारी सभाके मुख्य विद्वान और सर्वतया सम्पन्न मेवारामजी के लिये ' हे जनसभा के मंत्री , ऐसा छोटा शब्द देना आर्यसमाज के मंत्री महाशय जी की कितनी गम्भीर बुद्धि का परिचय देता है । सच तो ये है कि उक्त मंत्री जी महाराज के अन्तःकरणको मान और कोप के आवेशने इतना आच्छादित कर दिया कि कर्तव्याकर्तव्य के विचार की सुध बुध जाती रही । क्याही आर्यमहाशयों में प्रौढ़ता है अरे तुरन्त आप समुद्र बनकर जैनियों को थोड़े समझ छाइया * नहीं

* जिस जैन धर्म की बावत वैष्णव सम्प्रदायाचार्य महामहोपाध्याय जगत्प्रसिद्ध स्वामी राममिश्र शास्त्रीजी महाराज अपने वीर सम्वत् २४३२ बनारस चन्द्रप्रभा प्रेसमें छपे सुजनसम्मेलन में

बनाडाला। धन्य महाशय जी एकता के उपदेश देनेवाले, जैनियों ने क्या सच आपकी शरण लीथी। पाठक देखें इस पत्रका एक एक अक्षर अहंकार और क्रोधसे लथापथ है। जिनके चित्तमें इतना द्वेष भरा हुवा है वो कैसे स्नेह पूर्वक शास्त्रार्थ कर वस्तुका निर्णय कर

लिखने है इस में किसी प्रकारका उजर नहीं है कि जैनदर्शन वेदादि दर्शनोंसे भी पूर्वका है। और बडे २ नामी आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में जो जैनमत खंडन किया है वह ऐसा किया है कि जिसे सुन देखकर हंसी आती है। इत्यादि। और मुम्बई निर्णय सागर प्रेस के मालिक श्रीमान् तुकारामजी जावजी अपने सनातन जैनग्रन्थ माला प्रथम गुच्छक की सूचना में (वर्तमान के ऐतिहासिक अन्वेषणों से जैनमतभी एक सनातन पवित्र धर्म सिद्ध हुआ है और इसमत के प्राचीन आचार्यों ने भी आर्ष विद्या की उन्नत्यर्थ न्याय वेदांत तत्वादर्श योग धर्मशास्त्र काव्य नाटक चम्पू पुराण चरित कोश व्याकरण छन्द अलंकार गणित वैद्यक शिल्पादिक विद्याओं में लक्षावधि ग्रन्थ संस्कृत प्राकृत में रचकर सनातनी आर्ष विद्याको संरक्षित किया है जिनको देखने से वर्तमान के विद्वानों को अतिशयानन्द प्राप्त होता है और इन ग्रन्थों को भी पूज्यदृष्टि से देखकर निरन्तर मनन करनेसे आत्मकल्याण करनेका सुगम मार्ग दृष्टिगोचर कररहेहैं) इत्यादि लिखतेहैं और जगत्प्रसिद्ध मान्यवर पं० बालगंगाधरजी तिलक ने अहमदाबाद स्वेताम्बर जैनकान्फ्रेंस के व्याख्यान में बहुत कुछ प्रशंसा की है जोकि सन् १९०४ के अपने केशरी पत्र में प्रकाशित किया है ऐसे ही अनेक विद्वानों ने कहा है। उसी जैनधर्म को आजकल के आर्य समाजी महाशय छोइया नदी की उपमा देते हैं॥

सके हैं। अब आप ये विचारिये कि आर्य मन्त्री महाशयने पूर्वोक्त पत्र में कितने जोर से जैनसम्प्रदाय को शास्त्रार्थ करने के लिये लाचार किया है कि बस अब क्या बोलने को जगह है शास्त्रार्थ करनाही होगा अस्तु इतने परभी हमारे आर्य मंत्री महाशय का चित्त शीतल न हुआ घंटे भर बाद ही करीब शामके ६ बजे उसी दिन आश्विन शुक्ला तृतीया को मेवाराम जी के पास मंदिरजी में द्वितीय पत्र ले पहुंचे जिसकी नकल येहै।

॥ ओ३म् ॥

श्रीयुत लाला मेवारामजी।

ज्ञात हो कि हम आपके विचारानुसार आपके सिद्धांत विषय पर सर्वथा शास्त्रार्थ करनेके लिये सन्नद्ध हैं। अब आप लिखिये कि आपको शास्त्रार्थ करने में विकल्पतो नहीं है। कुछ पंडित यहां विद्यमान हैं और कुछ कलतक आजावेंगे। आपको हमें वचन देना चाहिये जिससे हमारा प्रयास तथैव सम्भार व्यर्थ न जावै। शास्त्रार्थ के नियम भी तय करलेने चाहिये ताकि अभीष्ट कार्य में विघ्न न पड़ै और आगामी दिनके २ बजे से (जो आपने कहाहै) शास्त्रार्थ शुरू होजावै। आपभी अपने पंडितों को बुलालीजिये॥

आपका उत्तराभिलाषी मंत्री आर्यसमाज खुर्जा १।१०।०५

समीक्षक, विचारिये कि आर्य मंत्री महाशय की क्या शास्त्रार्थ की ऐसी तेज डांकगाड़ी थी जो पहले पत्रका जवाबभी न आने देकर व्यर्थ दूसरा पत्र दे पुनरुक्त दोष अपने शिरपर धरा। पाठक विचारैं द्वितीय पत्र देने का क्या आवश्यकता थी क्या जैन विद्वान शास्त्रार्थ रूपी समरभूमि से भागना चाहते थे जो मंत्री महाशय द्वितीय पत्र रूपी वारंट ले पहुंचे बस हम क्या लिखें विद्वान पुरुष इस द्वितीय पत्र के लेखको भी विचारें कि जैनसम्प्रदाय को प्रत्युत्तर देना कितनी आवश्यक बातथी। यद्यपि जैनसम्प्रदाय प्रायः कलह का बीज आधुनिक शास्त्रार्थ करनेको सर्वथा अनुचित समझती है। परन्तु जब कोई सिरही होकर इज्जत लेने को उतारू हो जाय तो फिर (यशस्तुरक्ष्यंपरतो यशोधनैः) इस नीति वाक्य के

नुसार अपने पक्षकी रक्षा तो करनी ही पड़ती है अतएव जैन सम्प्रदायने निम्न लिखित पत्र आर्यमहाशयों को दिया ॥

श्री जैनसभा खुर्जा

श्रीमान् मंत्रीजी आर्यसमाज खुर्जा ।

पत्र दो मंत्री साहब की तरफ से आये परन्तु पत्रपर मंत्री साहबके हस्ताक्षर नहीं है और न उनका नामहै इससे पत्र वापेस किये जाते हैं हस्ताक्षर करके भेजिये ताकि शास्त्रार्थ के नियम तै किये जावैं

निवेदक मंत्री मेवाराम खुर्जा

। समीक्षक । हमारे पत्रको भी अवलोकन कीजिये किस नम्रता से भरा हुवा है उसके प्रत्युत्तर में निम्न लिखित पत्र आया ॥

ओ३म

श्रीयुत लाला मेवारामजी ।

आपके प्रेषित हमारे दो पत्र हस्ताक्षर होने के लिये आये । उन पर हस्ताक्षर करादिये । आशा है कि आप अब शास्त्रार्थ के नियम शीघ्र निर्णीत करदेंगे । हमारी तीन चिट्ठियां आपके पास इस चिट्ठी के सहित पहुंचीं ।

आपका उत्तराभिलाषी कृष्णलाल मंत्री

आर्यसमाज खुर्जा

१।१०।०५

समीक्षक । अब हमको ज्ञान हुआ कि आर्य मंत्री महाशयों का द्वितीय पत्र पत्र संख्या बढ़ाने ही को गरज से था जैसा कि आप अपने तृतीय पत्र म लिखते हैं कि हमारे तीन पत्र पहुंचे यदि इसी मैं बिमलाशय हमारे मंत्री महाशयने कुछ उत्तमता समझी थी तो पांच पांच मिनट में पत्र देकर पत्र संख्या बहुत बढा सक्ते थे अस्तु इसका प्रत्युत्तर जैनसम्प्रदाय की तरफ से निम्न लिखित दियागया

नं० २४ श्री: ॥

श्रीमान् मंत्री आर्य समाज खुर्जा

पत्र तीन आये आपसे कल दिन के तीन बजे आपका शा

रके करलेना जवानी तै होगया है जो हमारे व्याख्यान में हो। शा-स्त्रार्थ के लिये मध्यस्थ वगैरह सब कल दिन में मौजुवानी तै कर-लीजिये। क्योंकि आपने कहा था कि दो पत्र से ज्यादे आवें जांय तो हमारा वितण्डा समझना सो ये दो पत्र खतम हुए। अगर शा-स्त्रार्थ की कुछभी शक्ति रखते हो तो कल दिन में सहस्रों मनुष्यों के सामने नियम तै कीजिये।

मिती आसोज सुदि ३ रविवार सं० १९६२
निवेदक मेवाराम मंत्री जैनसभा खुर्जा

समीक्षक। इन पांचों पत्रों का आवागमन आश्विन सुदि २ सायंकाल के ६ बजे से रात्रिके करीब १२ बजे तक एकही दिन हुआ। यद्यपि जैनसम्प्रदायने वार्षिकोत्सव के लिये द्वितीया और तृतीया दोही दिन नियत किये थे। परन्तु वे तालके साज में आर्य मंत्री महाशय को बेतुकी तान उड़ाते देख जैनपंडितों ने भी आर्य महाशयों की इच्छानुसार दश पांच दिन सभा रखना निर्धारित करालिया। प्रत्येक जैनी के चित्त में शास्त्रार्थ की आशालता लहराने लगी। और पूर्णतया स्नेह पूर्वक पदार्थ निर्णय होना अनुमान कर हर्षवारिधि उमड़ने लगा। क्योंकि संस्कृतमें पत्रादि आने से और आर्यमहाशयों के द्वितीय पत्र के लेख से आर्यविद्वानों का शुभा गमन निश्चय हो ही चुका था। यह कौन जानता था कि हमारे आर्य महाशय शास्त्रार्थ रूपी पौदे को लेख और वाक्य रूपी जलसे सिंचन कर सत्यासत्य का विवेचनरूप मिष्टफल की लालसा दिखा जड़से उखाड़ डालेंगे। जैसा कि पाठकों को आसोज शुक्ला ४ की कार्रवाई से प्रतीत होगा। चतुर्थी को नियत समय पर निर्धारित स्थान में जैनपंडित और अन्य दर्शक मंडली अतिशय एकत्रित होकर करीब एक घंटे तक आर्य विद्वानों की प्रतीक्षा करती रहीः। पश्चात् आर्यभाइयोंने आकर सभा मण्डप को सुशोभित किया॥ प्रत्येक मनुष्य के चित्त में शास्त्रार्थ की उत्कण्ठा घूमने लगी। प्रथम ही मेवारामजीने कहा कि आप लोगोंको जो हमारे विद्वानों के व्या-ख्यानों में शंका है उन्हें मिटा लीजिये। पश्चात् शास्त्रार्थ के नियम तै करलीजिये। उत्तर में समाज के मंत्री महाशय बोले कि जिस

विद्वान ने संस्कृत में पत्र दियाथा वो चलेगये। वस ' वो चलेगये ' इस शब्द को सुनकर सम्पूर्ण दर्शक मंडली जो करीव एक सहस्र के थी सुन्न होगई। समस्त उपस्थित सभ्यगण शास्त्रार्थ का स्वप्न देखनेलगे। कुछ समयके बाद सभा मण्डप में क्षोभ हुआ। और प्रत्येक मनुष्य आर्यमहाशयों की बावत अपने अक्ल के घोडे को ' वो चलेगये ' इस शब्द के मैदान में दौडाने लगे। पाठक जरा तक लीफ तो होगी आपभी तो चंचल मनको एकत्रित कर बुद्धि रूप तेज तुरंगपर सवार हो इस मैदानकी सैरकर अक्षरों से गुंफित इस शब्द रूप गुच्छे के रंगीन पुष्पों की गंध ले स्वकीय मन तृप्त कीजिये। अस्तु उक्त पंडितजी के चलेजाने में कोई अतिशय गुप्त रहस्य है जिसको हमारे पाठक समझ गये होंगे। अव उपस्थित सभ्य गणोंकी सम्मति हुई कि उभय पक्ष के पांचों पत्र सभा मे सुनाये जांय। तिसपर मेवारामजी ने संस्कृत का प्रथम पत्र पढकर पूर्व लिखित अर्थ किया। और श्लोक के प्रत्युत्तर में ये श्लोक कहा॥

धीरध्वनिभिरलं ते नीरद मे मासिको गर्भः।
उन्मद वारण बुद्ध्या मध्ये जठरं समुच्छलति॥

अर्थ। वद्दल को गरजता देख सिंहनी ने कहा कि हे मेघ मत गर्जे मेरे एक मास का गर्भ है। उन्मत्त हाथियों की आशंका कर उदर में सिंह शावक उछलता है। भावार्थ। हे आर्य महाशयों ! जैनियों को छोइया नदी वता आप समुद्र वन न गर्जिये। हमारे शिष्य ही आपके एक एक प्रश्न के दस दस उत्तर देनेको सन्नद्ध हैं पाठक ये उसी श्लोक का प्रत्युत्तर है। एकही ग्रन्थ के दोनों श्लोक हैं। श्लोक और पत्रका अर्थ सुनकर एक आर्य विद्वान जो शायद सिकन्दराबाद के थे वोलने को खडे हुए ! वस हम क्या लिखें उक्त महाशय की उस समय की छवि का दृश्य दर्शनीय ही था। जो उपस्थित सभ्यगणोंने देखा होगा। हम लिखना एक तरह से अनुचित समझते हैं। अव सुनिये आपके मुखारबिंद से निसृत वाक्य पढ़ते यद्यपि इस चिट्ठी के लिखने वाले चले गये परन्तु मेरी राय में इस चिट्ठी का प्रयोजन शायद ये होगा कि ईश्वरके कर्ता मानने वाले बहुत हैं और जैनी जो कर्ता नहीं मानते थोडे हैं। आप ईश्वर के

कर्तृत्व विषयपर शास्त्रार्थ कीजिये। और आप के पंडितों ने जो कहा है कि हम वेद से विधवा विवाह खण्डन करते हैं ये बड़े आश्चर्य की बात है। जब आप वेद मानते ही नहीं तो वेद से खण्डन कैसे चोर की गवाही चोर कैसे देसक्ता है। और आप के विद्वानों ने स्वामीजी को भी वड़े कड़े शब्द कहे हैं ये ठीक नहीं। इसके उत्तर में मेवारामजीने कहा कि प्रथम तो महाशयजी का यही कहना युक्त नहीं है कि कर्ता के मानने वाले ज्यादे हैं। प्रत्युतः सांख्य बौद्धादि कर्ताके न मानने वाले ही ज्यादे हैं। और यदि येही मान लियाजाय कि कर्ता के मानने वाले ज्यादा ही हैं। तो क्या जैनसिद्धांत कमजोर होगया या मनुष्य ज्यादे की जैनसम्प्रदाय को धमकी दिखाईजाती है॥ कर्ता विषयपर विचार करना केवल सनातनधर्मियों को जोश दिलाने के वास्ते है॥ महाशय जी पहले ये कहें कि मूर्तिमण्डन, मोक्षआगमननिषेध, विधवाविवाह और नियोग खण्डनादि विषयोंपर विचार करने की हमारी शक्ति नहीं है॥ फिर जैनसम्प्रदाय इस विषयपर भी तयार है वेदसे विधवा विवाह कदापि सिद्ध नहीं होसक्ता॥ जिस पुस्तक को हम न मानें और आप मानें अगर उसी से हम आपकी वातको खण्डित कर दें तो इससे बढकर आप और क्या प्रमाण चाहते हैं॥ यदि चोरकी सहादत चोर से मिले कि मैं और यह दोनों चोरी करतेथे तो फिर दूसरे सबूत लेने की क्या जरूरत है। सचतो ये है कि आर्य विद्वान् महाशय की बुद्धि ने ऐसा चक्कर खाया कि कहना कुछ चाहतेथे और श्रीमुखसे निकलने लगा कुछ और। तथा स्वामी जी को हमारे विद्वानोंने बाबाजी के सिवाय कुछ नहीं कहा। आपके स्वामी जी महाराज ने तो जैनियों के तीर्थंकरों को भी मनमाना कहने में कसर नहीं रखी। आर्य विद्वान् महाशय को ऐसी युक्ति देनी बालचेष्टावत् है। खेदकी बात है कि आपके पंडितोंको शास्त्रार्थ करना नहीं है। यदि करना होता तो समरघोषणा कर समर समय क्यों भाग जाते अब उपस्थित महाशयगण विचारें कि आर्य महाशयों के विद्वान् ने कैसी प्रबल युक्ति दी और शास्त्रार्थ करने की जी में थी या नहीं। और विजयलक्ष्मी उसवक्त किस के हस्तगत रही। इसपर कोई आर्यमहाशय न बोला

हब रायबहादुर नत्थीमलजी व आनरेरीमजिस्ट्रेट श्रीमान् आनकी अग्रवती आदि ने कहाकि बस हमको मालूम होगया अब सभा विसर्जन की जाय। और सभा विसर्जन हुई ॥ पश्चात् आश्विन शुक्ल ५ या ६ को किशनलालजी मंत्री महाशय एक लम्बा चौड़ा नोटिस लेकर मेवारामजी के पास मंदिर जी में गये और कहा कि हमारे विद्वान सब आगये हैं शास्त्रार्थ करलीजिये । मेवारामजी ने उत्तर दिया कि यदि आपको शास्त्रार्थ करना मंजूरथा तो उस वक्त आप क्यों न बोले। यदि आप उसवक्त यह कहदेते कि हमारे पंडित पीछे से आवेंगे और शास्त्रार्थ होगा तो जैनविद्वान काहेको चले जाते। और मण्डपादिभी क्यों खोलदिया जाता अब कुछ नहीं हो सकता। यदि आपको शास्त्रार्थ करना हो तो महीने दो महीने बाद नियम स्थिर करके फिर करलीजिये। उसपर आर्यसमाज मंत्री महाशय कुछ न बोले। और नोटिस वापिस लेकर चलदिये। फिर गुरु-बाजार में अपनी दुकानपर खूब भजन गववाये । और जैनियों को समझाना कहकर शास्त्रार्थ हारने की इकतरफा डिगरी करली आपही वक्ता और आपही श्रोता बस क्या था परस्पर श्लाघा कर जबरन विजयलक्ष्मीसे निज कंठमें विजयमाला डलवाली। बस येही विरोध बीज आर्य महाशयों ने जैनियों के हृदय में निजकर कमल से बोया फिर आश्विन शुक्ला ८ सं० १९६३ को रायबहादुर नत्थीमलजी व उन के लघुभ्राता श्रीमान् रामसहायमलजी जो रामलीला के प्रेसी-डेंट थे मेवारामजीसे बोले कि आज तुमको रामलीलास्थ सनातन-धर्म के कैम्प में सनातनधर्म और जैनधर्म के अविरोधी विषयोंपर व्याख्यान देना चाहिये। हम सनातनधर्म की सभा में पहिले सब से पूछ चुके हैं। अन्य जैनी भाइयों के सनातनधर्म के कैम्प में मेवारामजीके व्याख्यान देनेकी नहीं जचने पर भी मेवारामजीने राय बहादुर नत्थीमलजी साहब (जिनसे उनका घनिष्ठतम सम्बन्ध है) की आज्ञाको पालन करना अपना कर्तव्य समझ उपदेश दिया। और उसमें मूर्तिमण्डन मोक्षआगमननिषेध करते हुए उपस्थित सभ्य लोगों से कहा कि मेरे व्याख्यान में किसी महाशय को शंका हो तो [illegible] निर्णय करलें। और आर्य महाशयों को ये भी

सूचना दीजाती है कि यदि इस वक्त कोई विद्वान् आप लोगों में उपस्थित न हो तो मिती मगसिर कृष्णा ६ से जो जैनमेला होगा उसमें जैनविद्वान आर्यमताभिमत तत्वोंका खण्डन करेंगे यदि आप चाहें तो उस समय अपने विद्वानों को बुलाकर प्रश्नोत्तर पूर्वक निज तत्वों का मण्डन करें। जिस से सत्यासत्य का विवेचन हो॥ और येभी कहा था कि शास्त्रार्थ और प्रश्नोत्तर में बहुत फर्क है। शास्त्रार्थ में विद्वान् मध्यस्थ होता है॥ और नगर के प्रधान पुरुषको निर्विघ्न समाप्ति का भार अपने सिरपर लेना होता है। और विषय भी उभय पक्ष की सम्मति से निर्णय होता है। इत्यादि बहुत नियम हैं। प्रश्नोत्तर में अधिक नियमों की आवश्यकता नहीं होती॥ अतएव शास्त्रार्थ नगर के प्रधान पुरुष की सम्मति के बिना नहीं हो सक्ता॥ यदि कोई प्रधान पुरुष शास्त्रार्थ के भारको स्वीकार करे तो जैनसम्प्रदाय उसके लिये भी तयार है। अन्यथा पूर्वोक्त विषय में ही प्रश्नोत्तर होने चाहिये। उस समय सहस्रों मनुष्य एकत्रित थे किसी भाई ने कुछ न कहा। पश्चात् मेवारामजी ने अपना उपदेश समाप्त किया। और सनातन धर्म के मंत्री श्रीमान् पं० रामस्वरूप जीने मेवारामजी को बहुत कुछ धन्यवाद देतेहुए सभा विसर्जन की फिर मिती कार्तिक वदी ११ सं० १९६३ ता० १४ अक्टूबर सन् १९०६ को एक विज्ञापन आर्य महाशयों ने छपवाकर नगर में वितरण करवा दिया जिसकी नकल ये है॥

ओ३म्

॥ विज्ञापन ॥

सर्व साधारण जन समुदाय में यह जनश्रुति (अफवाह) है कि " आर्य्य समाज खुर्जा का जैन सभा के संरक्षक श्रीमान् लाला मेवाराम जी के साथ शास्त्रार्थ होने वाला है" आर्य्य समाज खुर्जा के कार्य्यालय में जैनमतानुयायियों का कोई लेख वद्ध पत्र नहीं आया है जिसके आधार पर समाज अपने मान की रक्षा के लिये उचित प्रबंध करता अतएव इस विज्ञापन पत्र द्वारा जैन मताव-

म्बियों की सेवा में सविनय निवेदन किया जाता है कि यदि वे शास्त्रार्थ करने के लिये उद्यत हैं तो तीन दिवस के अन्तर गत ही सूचित करें कि शास्त्रार्थ किन २ विषयों पर किन २ तिथियों में और किन २ नियमों के अनुसार लेखबद्ध अथवा मौखिक आरम्भ होगा ऐसा न हो कि मध्यस्थ के व्याज से शास्त्रार्थ में किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित हो यह तो आप लोग भली प्रकार जानते ही हैं कि आर्य्य समाज ऐसे २ शुभ अवसरों की सर्वदा प्रतीक्षा किया करता है एवमेव इस अवसर पर भी उत्साह पूर्वक प्रस्तुत है ॥ तारीख १४—१०—१९०६

आपका उत्तराभिलाषी

मास्टर लोकानंद गार्ग्य मंत्री आर्य्य समाज खुर्जा

समीक्षक। विचार कीजिये इन विज्ञापनदाता महोदय की बुद्धि कितनी शाणोल्लीढ है। क्या अफवाह की बातपर भी कोई यकीन कर किसी के सिर होता है दुनियां में सहस्रों अफवाह उड़ा करती हैं आर्य महाशयों के नोटिस के लेखानुसार पाठक विचारें जब जैन-धर्मावलम्बियों की तरफ से शास्त्रार्थ की कोई सूचना आर्य समाज को नहीं दीगई तो आम पवलिक में नोटिस निकालना कितनी बड़ी भूल है। और यदि कुछ अनहोंनी वात भी हमारे आर्य महाशय सुना करते हैं तो मंत्री जैनसभा को एक चिट्ठी लिखकर पूछलेना था॥ नोटिस का आडम्बर कर शास्त्रार्थ में अपने को सवल समझ जैनियोंको क्यों दवाया गया सत्य तो ये है कि आर्यमहाशयोंकी तत्व विषयपर विचार करने की शक्ति विलकुल नहीं है। जैसा कि आगामी नोटिसों से विदित होजाइगा। शास्त्रार्थ का भय दिखा जैनियों को डराना चाहाथा परन्तु छोटाभी सिंहशावक मदोन्मत्तगज गर्जना से कव डरसक्ता है। दूसरेही दिन जैनसम्प्रदाय ने नोटिसका प्रत्युत्तर छपा नगर में वितरण करादिया। जिसकी नकल नीचे है पाठक वे भी विचारें कि नोटिस की भद्दी कार्रवाई किसने शुरू कर शांति प्रिय नगर में अशांति फैलाने का प्रबन्ध किया॥

॥ श्रीः ॥

श्रीयुत लोकानन्दजी मंत्री आर्यसमाज खुर्जा जयजिनेन्द्र महोदय

विज्ञापन मिला शास्त्रार्थ का कोलाहल मचाकर दल बांधना हमारा काम नहीं है हमारे पंडित मार्गशीर्ष कृष्णा ६ से नवमी तक यथोचित समय में आर्यमताभिमत तत्वों का खण्डन व्याख्यान द्वारा करेंगे येही विषय है ॥ तिथी पूर्वोक्त है ॥ समय उक्त तिथि से ४ दिवस पहले सूचित करदिया जायगा ॥ मध्यस्थ उपस्थित सभ्य गण होंगे ॥ और कोई विशेष नियम नहीं है यदि आपके पंडितों में शक्ति है तो स्वाभिमत तत्वों का मण्डन करें प्रश्नोत्तर के लिये योग्य समय दिया जाइगा ॥ वृथा कागज रंगना असमंजस है ॥ अलमति विस्तरेण ॥ निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १ जैनसभा खुर्जा

ता० १५ अक्टूबर १९०६

पाठक हमारे नोटिस के रहस्य को विचारें आर्य महाशयों के प्रश्नों का उत्तर देकरभी द्वेषाग्नि के भय से शास्त्रार्थ शब्द से व्यव-- हार नहीं किया। जिसका अर्थ आर्यमहाशयों ने अपनी दूरदर्शिनी बुद्धि से जैनियों को शास्त्रार्थ से भयभीत होना लगाया जैसा कि अगले नोटिसों से ज्ञात होगा। पाठकों से हमारी ये भी प्रार्थना है कि हमारे नोटिस और आर्यमहाशयों के नोटिस की रचना और अर्थगह्वरता परभी ध्यान दिया जाय। इसके प्रत्युत्तर में एक गुप्त चिट्ठी हस्तलिखित आर्य समाज की तरफ से मेवारामजी के पास आई जिसकी नकल आर्य महाशयों के द्वितीय विज्ञापन में आपको मिलैगी मेवारामजी ने गुप्त चिट्ठी में अपने ऊपर झूंठा आक्षेप देख आमपबलिक में जाहिर करादेना आवश्यक समझा। क्योंकि राम-- लीला में सहस्रों मनुष्यथे। वो सत्यासत्य का निर्णय बिना नोटिस के कैसे करसक्ते थे। झूंठा आक्षेप गुप्त चिट्ठी की समीक्षा में निवे- दन किया जाइगा। दूसरे पहिले आर्यमहाशयों ने जब आम पबलिक में नोटिस देकर शोर मचादिया फिर कुलिया में गुड़ फोड़ना कौन- सी बुद्धिमानी है। अतएव गुप्त चिट्ठी के प्रत्युत्तर में जैनधर्मावल- म्बियोंकी तरफसे निम्न लिखित नोटिस छपाकर वितरण कियागया

॥ श्रीः ॥

॥ विज्ञापन ॥

आर्य महाशयों की गुप्त चिट्ठी का प्रत्युत्तर

सम्पूर्ण धर्मोत्साही सज्जन वृन्दों को विदित हो कि समाज की तरफ से एक पत्र पंडित मेवारामजी के पास मिती कार्तिक शुक्ला २ शुक्रवार को आया जिससे अद्भुत ही रस टपकता है अस्तु भ्रातृवर्गो यह तो आप सभी जानते हैं कि आर्य महाशयों का यह सदैव का कार्य है कि वृथा पत्रादि रंगकर विचारके नियत समय को टाल देना अवभी उसीका पूर्वरंग है अन्यथा गुप्त पत्र क्यों? बस जब तक आर्यसमाज अपने पत्रको छपाकर सर्वत्र प्रकाशित न करै तब तक प्रत्युत्तर देना केवल पिष्ट पेषण है ॥ अलंभुन्तु ॥

निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १ जैनसभा खुर्जा

समीक्षक । हमारे इस तीसरे विज्ञापन में जो 'अद्भुतही रस टपकता है' ये शब्द हैं सो मेवारामजी पर झूठे आक्षेप परक हैं इस के उत्तर में आर्यमहाशयों का निम्न लिखित छपा विज्ञापन वितरण हुआ ॥

॥ ओ३म् ॥

विज्ञापन

प्रिय वाचक वृन्द यह आप लोगोंपर भली प्रकार प्रकट है कि आर्य्य समाज खुर्जा का जैनसभा के साथ शास्त्रार्थ वा विचार होने वाला है जैसा कि आप महाशयों ने आर्य्यसमाज और जैनसभा के पूर्व प्रदत्त विज्ञापनों से प्रमाविषयीभूत किया होगा यद्यपि स्थानीय आर्य्यसमाज ने श्रीमान् पं० मेवारामजी के साथ शास्त्रार्थ करने का दृढ़ निश्चय करालिया था परन्तु प्रशंसित पंडितजी ने शास्त्रार्थ को अस्वीकार करते हुए केवल प्रश्नोत्तरोंके लिये ही समय देने की प्रसन्नता प्रकट की है अस्तु आर्यसमाज प्रश्नोत्तरों के लिये भी अब

इस वह परिकर है परन्तु उक्त पंडितजी से इतना जानना चाहाथा कि प्रश्नोत्तर किन २ नियमों के अनुसार होंगे जैसा कि आपको निम्न लिखित पत्र से विदित होगा आश्चर्य तो यह है कि श्रीमान् ने हमारे १९ तारीख के पत्र का तत्काल उत्तर न देकर एक विज्ञापन में गिने चुने शब्द लिखकर और विज्ञापन को छपवाकर सर्व साधारण में वितीर्ण करादिया है इसमें सन्देह नहीं कि इससे श्रीमान् का मति चातुर्य विशद है परन्तु क्याही अच्छा होता कि आप १९ ता० को ही हमारे प्रश्नों के उत्तर देकर हमें शास्त्रार्थ की तैयारी के लिये अवकाश देते जिससे आर्यसमाज अपने पंडितों को निमंत्रित करके स्थानिक प्रबन्ध में दत्तचित्त होता आपके मुद्रित उत्तर मांगने पर तीन चार दिवस निष्प्रयोजन ही गये जिसका आर्यसमाज को अत्यन्तही पश्चाताप है ॥ कहिये इस प्रकार समय को बिताकर शास्त्रार्थ वा विचार से जैनी हटते हैं वा आर्यसमाज ॥

पत्र संख्या १७/१९०६

॥ ओ३म् ॥

कार्यालय आर्यसमाज खुर्जा ता० १९-१०-०६

श्रीमान् ला० मेवारामजी मंत्री जैनसभा खुर्जा

महोदय वर नमस्ते—आपके उत्तर ने यहतो हमको स्पष्ट रीति से ज्ञात करादिया कि जैन समुदाय शास्त्रार्थ करना तो नहीं चाहता किन्तु प्रश्नोत्तरों के लिये निमंत्रण अवश्य देता है हमतो यह आशा करते थे कि श्रीमान् ने जिस प्रकार रामलीला के मेलेपर मोक्ष, तत्व, मूर्तिपूजा और कर्ता आदि विषयों पर आर्यों को चैलेंज दिया था उसी प्रकार शास्त्रीयबल और पांडित्य के साथ शास्त्रार्थ भी करेंगे परन्तु शोक है कि श्रीमान् केवल एक तत्वविषय पर ही प्रश्नोत्तर द्वारा विचार करने की रुचि प्रगट करते हैं अस्तु आर्यसमाज इस को ही प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करता है कृपया निम्न लिखित प्रश्नों का यथोचित उत्तर तत्काल देकर कृतार्थ कीजिये ॥

१—क्या उभय पक्ष के विद्वानों को प्रश्नोत्तरों के लिये समान समय दिया जायगा और प्रश्नोत्तर दिनभर हुआ करेंगे अथवा नि॰

वा स्थानपर नियत समय में केवल दोही तीन घंटे प्रति दिन हुवा करेंगे वा क्या ॥

२—क्या दोनों ओर के विद्वान उपस्थित सभ्य गणों के सन्मुख निर्विघ्न व्याख्यान देसकेंगे जिससे परस्पर प्रेम का संचार हो ऐसा तो न होगा कि जय पराजय सूचक शब्द इन विद्वानों के धर्मान्दोलन में बाधक हो।

३—क्या इस कार्य की उत्तमतया समाप्ति के लिये कोई प्रतिष्ठित महाशय प्रबन्धक अथवा सभापतिभी नियत होंगे ॥

४—महाशयजी यदि आपका विचार केवल साधारण प्रश्नोत्तरों का हो तो आर्य समाज खुर्जा को विशेष प्रबंध करनेकी आवश्यकता नहीं है अतएव यदि शास्त्रार्थ करना स्वीकृत हो तो शीघ्र ही सूचित करें जिससे आर्य समाजभी उचित प्रबन्ध करने के लिये कटिबद्ध हो ॥

भवदीय उत्तराभिलाषी लोकानन्द गार्ग्य

मंत्री आर्य समाज खुर्जा ता० २२-१०-०६

समीक्षक ॥ जरा ध्यान से पढ़िये आर्यमहाशयों के इस विज्ञापन में जो नीचे गुप्त चिट्ठी छपी हुई है वोही मेवारामजी के पास जैनियों के पहले विज्ञापनके प्रत्युत्तर में आई थी। अब सुनिये पहले इस विज्ञापन को लम्बा चौड़ा दिखाने के अभिप्राय से जो शब्दाडम्बर किया है उसकी गढंत जैनियों ने अभीतक शास्त्रार्थ शब्द का व्यवहार भी आर्य महाशयों के साथ में नहीं किया। और न द्वेषाग्नि फैलने के भयसे करनेका विचारथा क्योंकि जैनसम्प्रदाय पूर्णतया जानती है कि आर्यमहाशय कभी किसी से स्नेह पूर्वक वस्तु निर्णय की गरज से शास्त्रार्थ नहीं करते। प्रत्युतः स्वकीय मानकषाय पोषण और द्वेषाग्नि पैदाकरने के लिये परन्तु आर्य महाशयों ने "हमने मेवारामजी से शास्त्रार्थ करना दृढ निश्चय करलिया था मेवाराम जी ने शास्त्रार्थ को अस्वीकार किया" इत्यादि वाक्यों से जैनसम्प्रदाय को टीलोलीली दिखाना प्रारम्भ करही दिया। वहां शास्त्रार्थ शब्दका नामभी नहीं यहां आप दृढ निश्चय भी करचुके । धन्य महाशयजी ! भला जी क्या जैनियों के सिद्धांत को धताखाही समझ

बैठे जो शास्त्रार्थरूपी जल में घोल छान पान करजाओगे। जैनी तो अशांति से हमेशा डरते हैं। जब विचार या प्रश्नोत्तर शब्द कहा गया। नहीं एकवार क्या सहस्रवार शास्त्रार्थ कर मनकी उमंग निकालिये। पाठक विचारें 'इससे श्रीमान् का मतिचातुर्य विशद है' ये लिखना आर्यमहाशयों का प्रथम सभ्यतारूपी सोपान से पैर डिगमिगाना है। अब आप गुप्त चिट्ठी में मेवारामजी पर झूंठे आक्षेप लगाने की वात सुनिये। आर्यमंत्री महाशय ने गुप्त चिट्ठी में लिखा है पं० मेवारामजी ने रामलीला के मेलेपर मोक्ष तत्व मूर्तिपूजा और कर्ता आदि विषयोंपर चेलेंज दिया था। पाठक सत्य जानिये मेवारामजी ने जैन मेलेपर केवल तत्व विषयपर प्रश्नोत्तर करने को कहा था। न तो शास्त्रार्थ करने का जिक्र था और न कर्तादि विषय का। रामलीला में उपस्थित सभ्यगण सब जानते हैं। ये आर्य मंत्री महाशय का लिखना विलकुल असत्य है। चाहें जिस तरह निर्णय कर लिया जाय। हम आर्य महाशयों की कतिपय वात असत्य दिखाते हैं आर्य मंत्री महाशय उनका जवाब क्यों टालजाते हैं। हमारे किसी विज्ञापन में कहीं भी असत्य दिखाइये निर्वल पक्ष वालाही असत्य से सहाय लेता है। अस्तु इसके उत्तरमें जैनियों की तरफ से निम्न लिखित विज्ञापन छपाकर वितरण कराया गया॥

॥ श्रीः ॥

स्वामी दयानन्द मतानुयायिओं के द्वितीय विज्ञापन का प्रत्युत्तर

सज्जनगणों यद्यपि हमारे सुहृद्वरों की गुप्त चिट्ठी और विज्ञापन का रहस्य आपलोगों ने जानही लिया होगा तथापि मैं कुछ रहस्य की वात लिखकर आपलोगों का समय लेना चाहता हूं आर्य महाशयों ने जैनियों को शास्त्रार्थ से भयभीत वताकर "मनके लड्डू फीके क्यों" इस कहावत को पूर्णतया चरितार्थ किया है बस अब हम ये पूछना चाहते हैं कि शास्त्रार्थ किसको कहते हैं क्या धूर्तता से कलह कर शांतिप्रिय नगर में अशांति फैलाने का नाम अथवा

कुत्सित शब्द बोलकर विद्वानों में द्वेषाग्नि भडकाने का नाम या शास्त्रार्थ का कोलाहल मचाने का नाम शास्त्रार्थ है भाइयों इस शांतिप्रिय जातिने इस (शास्त्रार्थ) शद्ब को विचार या प्रश्नोत्तर शब्द से इसलिये कहा है कि प्रायः आधुनिक शास्त्रार्थों मे कलह होकर धर्म के मूल मे क्षति पहुंचती है और अविद्वानों द्वारा वह द्वेषाग्नि पैदा होती है कि जिसपर असीम शांति सलिल डालने पर भी नहीं बुझती और यदि हम अपने शुभ कार्य के निर्विघ्न समाप्ति के लिये नगर के प्रतिष्ठित पुरुषों को मध्यस्थ वनाने का नाम लेते तो आर्य महाशय सबको अपने विरुद्ध वताकर मध्यस्थ के व्याज से शास्त्रार्थ से हटजाने का शोर मचाते इसलिये विचार या प्रश्नोत्तर शब्द कहा गया. जैनियों का यह मनसा है कि शांति भाव से दोनों ओर के विद्वान विचार करें जिससे साधारण मनुष्य भी सत्यासत्य का विवेचन कर भ्रमजाल से छूटजांय। गिने चुने शब्द और चार दिवस वृथा खोने का आक्षेप भी जैनियों पर निर्मूल है क्या वृथा कागज रंगने ही में हमारे सुहृद्वरों ने पाण्डित्य समझा है और द्वितीय आक्षेप तो हमारे श्रीमानों को हां अलंकृत करता है। जैनियों ने तो प्रथम विज्ञापन का उत्तर दूसरे ही दिन देदिया था परन्तु आर्यमहाशयोंने प्रत्युत्तर चार दिवस वाद दिया अब आप विचारिये कि किसने निष्प्रयोजन दिन विताये। आश्विन शुक्ला ८ को पं० मेवाराम जी ने तत्त्व विषयपर विचार करने की सूचना दी थी या कर्ता आदि विषयों पर। इसको रामलीला में उपस्थित सहस्रों सभ्यगण स्मरण कर सत्यासत्य का निर्णय करें बस भ्रातृवर्गो यदि आर्य महाशयों में तत्त्वोंपर विचार करने की शक्ति नहीं है तो वृथा कागज रंगकर अपनी स्वाभाविक प्रकृति क्यों प्रघट करते हैं। यदि आर्यसमाज महोने पन्द्रह दिनतक वाद की खाज खुजाकर मनकी उमंग निकालना चाहता है तो श्रीमान् जानकीप्रसादादि नगर के किसी प्रधान पुरुष के समक्ष हमलोगों को बुलाकर और अपने प्रधान पुरुष राम [illegible]जी आदि को लाकर विशेष नियम तयकरले जैनी पूर्णतया तय्यार हैं वृथा कागज स्याही में द्रव्य नष्ट करना युक्तिमत् नहीं है।

क्रमसे प्रश्नों का उत्तर

(१) जिस समय से खण्डन प्रारम्भ होगा उस समय से उभय पक्ष के विद्वानों को समान समय दिया जायगा व्याख्यान जैनमेलेमें छठ, सप्तमी, अष्टमी तीन दिन होगा । प्रश्नोत्तर दो या ढाई घंटे समयानुसार होंगे । दिनभर का प्रश्नकरना हमारे आर्यमहाशयों की विशाल बुद्धि का परिचय है ।

(२) हमारे विद्वानों के व्याख्यान में आर्य विद्वद्वर प्रश्नोत्तर कर सकेंगे क्या अपने तत्वों के मण्डन में असमर्थ आर्य महाशय व्याख्यान देकर सभा को रंजायमान करना चाहते हैं सो न होगा जय पराजय सूचक शब्द उन्हीं के मुखसे निकलते हैं जो मंडन में असमर्थ होते हैं ॥

(३) कार्य की निर्विघ्न समाप्त्यर्थ उपस्थित प्रतिष्ठित पुरुष होंगे

(४) यदि हमारे सुजन जनों की गम्भीर धी में तत्व विषय भी साधारण है तो तत्वातिरिक्त असाधारण विषय कौनसा ? मालूम होता है कि हमारे भ्रातृसमूह को तत्वशब्द का अर्थ स्पष्टतया अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है । क्या अबभी आर्यमहाशय पत्र रंगकर लेख कौशल्य दिखाने का साहस करेंगे ॥

निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १ जैनसभा खुर्जा

समीक्षक । हमने अपने इस नोटिस में भी कलहके भयसे शास्त्रार्थ करने को साफ नहीं लिखा परन्तु आर्य मंत्री महाशय के सिर पर तो शास्त्रार्थ शब्द का भूत सवारथा सो विचार शब्द के कहने से भी कब उतरसकता था । वीर रस से भराहुआ निम्न लिखित नोटिस वितरण कराही डाला ॥

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज खुर्जा और खुर्जा जैनसभा का शास्त्रार्थ

जैनसभा के अन्तिम विज्ञापन के उत्तर में (जिस में तारीख नहीं

छपी है) प्रकाशित किया जाता है कि आरम्भ में रामलीलाके व्याख्यान में ला० मेवारामजीने (गर्व से) कहा था कि जैन मेले में आने वाले जैन विद्वानों के सामने आर्यसमाज अपना पूरा बल लगा कर दयानन्दमत विषयक खण्डन का समाधान करें इत्यादि। जैनियों का अपने मेले में किसी मत पर इतना हमला करने का संकल्प (इरादा) शांतिप्रियता का सूचक नहीं, जिस शांतिप्रियजाति का गौरव इस विज्ञापन में दर्शाते हैं। विशेष कर ला० मेवारामजी जैसे प्रतिष्ठित, रईस और पढ़े लिखे पुरुष को ऐसे (उग्र) शब्दों में आर्य समाज को चेलेंज देना (उत्तेजित करना) उत्तम कोटि की सभ्यता न थी। जैनभाइयों को अपना सदा की भांति मेला करना था उसमें समाज को चेलेंज न देना था, और चैलेंज दिया तो अब जैनमतपर समाज आक्षेप करेगा उसके समाधान का भार जैनों को लेना चाहिये, वैदिकधर्म पर जो जैन आक्षेप करें उनके समाधान का भार आर्यसमाज पर रहे। ऐसा होना चाहिये। कुछ आवश्यक नहीं है कि मेले के ३ दिनों में ही जैन भाई अपने अन्य कार्यों में संकोच करके ३॥ घण्टे ३ दिन में समाज के प्रश्नोत्तरों को दें। इस काम को जैन भाई करना चाहे तो पृथक् तिथियों में नियमपूर्वक शास्त्रार्थ करनेका यत्न करें और १५ या २० दिन पूर्व समाजसे लाला जानकी प्रसादजी रईस व आनरेरी मजिस्ट्रेट के स्थान में बैठकर नियम स्थिर करलें। परन्तु ऐसा करना वे नहीं चाहते तो समाज इस के लिये भी सन्नद्ध है कि ३ दिन सवा सवा घण्टा करके समाज को ३॥ घण्टे जो जैन सभा ने देने किये हैं, समाज उन घण्टों में ही प्रश्नोत्तर से वैदिकधर्ममण्डन और जैनमतखण्डनपर विचार करेगा।

वृथा काले कागज न होने के लिये जो समाज ने जैनसभा को पत्र भेजा उसको विना छपा होने से गुप्त पत्र बताया गया, अब कागज काले करने की प्रेरणा जैनसभा की कीहुई, न कि हमारी। खुर्जा में छापेखाना स्वतन्त्र न होनेसे जो ४ दिनमें समाज का उत्तर हुआ उसपर समयाऽतिवाहन का दोष देना उचित नहीं है। तत्वविषयक विचार में कई तात्पर्य हो सके हैं। १-यह कि ईश्वरादि

तत्वोंपर विचार कियाजाय । २-यह कि किसीभी सिद्धांतकी असलियतको तत्व कहकर उसपर विचार किया जावै इत्यादि। जोकुछ हो, स्पष्ट होनेपर समाज तैयार होगा। परन्तु अपने उत्सवों पर जैसे समाज अन्य मतों को वैदिकधर्म के विरुद्ध शंकाओं के समाधान का अवसर देता है, वैसे जैनसभा को भी जैनमत पर शंका करने का अवसर देकर समाधान करना चाहिये। यह बचाव की नीति क्यों अवलम्बित करते हैं कि जैनमत तो अछूता छोड़ा जाय, जिस को हटाकर सनातन वैदिकधर्म पर लाने के लिये प्रसिद्ध स्वामी शंकराचार्य दिग्विजयी से लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज पर्यंत प्रत्येक वैदिकधर्म के रक्षक विद्वान् यत्न करते रहे हैं, जिन जैनादि वेदविरुद्ध मतों के निराकरण पूर्वक वेदधर्मस्थापनार्थ शंकरादि महात्माओं ने अपना जीवन अर्पण किया उन्हीं महात्माओं के रक्षित वैदिकधर्म का मण्डन करना और तद्विरुद्ध जैन बौद्धादि का प्रत्याख्यान करना अपना कर्त्तव्य समझ कर लौकिक सम्पत्ति न्यून होनेपर भी सत्य के सहारे आर्यसमाज खुर्जा शास्त्रार्थ वा विचार जो जैन भाई अच्छा समझें करेगा ॥

२७-१०-६ लोकानन्द गार्ग्य मन्त्री

आर्यसमाज खुर्जा

॥ समीक्षक ॥ आर्य मंत्री महाशय के इस नोटिस में क्रोध और मानके अतिरिक्त जैनियों को एक गुप्त भय भी दिखाया गया है जिस को पाठक ध्यान से देखें। रामलीला में उपस्थित सभ्यगण याद करें क्या ऐसे कडे शब्द मेवारामजीने कहे थे लेकिन दवात कलम कागज घरका है जो चाहें सो किसी को लिखडाला। पाठक इस विज्ञापन के लेखसे साफ झलकता है कि आर्यमंत्री महाशय नियमित तत्व विषय को छोड़ और किसी विषय की ओट लिया चाहते हैं अन्यथा कहिये अपने दूसरे नोटिस में तो तत्त्व विषय पर विचार करना स्वीकार करालिया इस नोटिस में लिखते हैं तत्त्व शब्द का अर्थ मालूम होने से तत्त्व विषयपर शास्त्रार्थ करेंगे। ये परस्पर विरोध का भार आर्यमहाशय क्यों अपने शिर रखते । अथवा क्या

दूसरे नोटिस में तत्त्वशब्द का अर्थ बिना जानेही आर्यमन्त्रीमहाशय ने तत्त्वविषयपर विचार करना स्वीकार कर लियाथा जो अब इस नोटिस में अर्थ पूछा जाता है सचतो येहै कि अभेद्य जैनसिद्धांत दुर्गमें आर्य महाशयों का मायामयी गोला कुछ कार्य साधक नहीं हो सका। पाठक स्वयं विचारलें आर्यमहाशयों के नोटिसों में पूर्वापर विरोध होने से किसी एक विद्वान् द्वारा सम्पादित हुए नहीं मालूम होते। जैसे जैसे आर्यमन्त्री महाशय को अपने नोटिसों में क्षति मालूम होती गई है वैसे ही वैसे उच्च श्रेणी के विद्वानों द्वारा निर्माण कराते गये हैं। अन्यथा इस नोटिस का लेख और आर्यमहाशयों के अन्तिम नोटिस का लेख मिलाइये। साफ निर्माण कर्ता पृथक् पृथक् मालूम होते हैं यद्यपि हमको इससे कुछ गरज नहीं है। चाहे दस विद्वानों से नोटिस निकलवाये जाते परन्तु इतना कहना है कि यदि प्रथम से ही किसी योग्य विद्वान् की सम्मति लीजाती तो नोटिस न रंग-कर उत्तम शास्त्रार्थ होता। पाठक येभी विचारें हम पहले कहआये हैं कि जिसकी पक्ष निर्बल होती है वोही प्रथम कडे शब्द बोलकर लडनेपर उतारू होता है। अब कहिये आर्यमन्त्री महाशयने इस नोटिस को कितना कड़ा किया है। सज्जन पुरुष विचारें। बिना अपनी पक्ष के गिरे कोई अपने विरोधी की शरण लेता है। जो आर्यमहाशयों ने सत्यार्थप्रकाश में नास्तिक मतके प्रवर्तयिता आदि अनेक बुरे शब्द स्वामी शंकराचार्य जी महाराज को कह पूर्वोक्त नोटिस में महात्मा आदिकी पदवी दे उनकी ओटली ये जैनियोंही के विचार का फल है। अब ये भी कहिये पबलिक को भडकाना पहले किसने शुरू किया अस्तु इसके उत्तर में जैनसम्प्रदाय की तरफ से निम्न लिखित नोटिस वितरण हुआ॥

॥ श्रीः ॥

आर्य महाशयों के २७ तारीख के विज्ञापन का प्रत्युत्तर।

विदित हो कि आर्य महाशयों के इस विज्ञापन से पूर्व जो दोनों

तरफ के विज्ञापन निकले हैं उनमें कुत्सित शब्दों का उल्लेख नहीं है परन्तु २७ तारीख के विज्ञापन से संसार भरकी निन्दा ही को परम कर्तव्य समझने वाले एक लोकानन्द गार्ग्य ने मनुष्यता को छोड़ हमला करना, मेवाराम असभ्य हैं इत्यादि शब्दों से जैनसम्प्रदाय को मनमाने शब्द कहकर अपने शुद्धान्तःकरण का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया है। भाइयो जैनसम्प्रदाय क्या विषाद करे इन के गुरूजी महाराज दयानन्दजी ने सम्पूर्ण सम्प्रदायों के वडे वड़े महर्षि और परमात्मा को भी उन शब्दों में व्यवहार किया है कि जिस को सुनकर प्रत्येक पुरुष का मन कांप जाय जिसका दिग्दर्शन मात्र दयानन्दजी के सन् १८८७ के सत्यार्थ प्रकाश से हम लिखते हैं आप लोग विचार करिये कि ऐसे मतका अनुयायी जैनियों को कुवाच्य ही क्या वल्कि कोई अनुचित भी कार्रवाई करे तो क्या आश्चर्य है जैसा कि पूर्वभी ये लोगकर चुके हैं आज आर्य लोग वैदिकधर्म के प्रधानाचार्य शंकराचार्य जी महाराज की ओट में वैठ जैनियोंपर चोट कर पवलिक में जोश भर अखण्डनीय सिद्धांतों का खण्डन भार शिरपर धर अपने अभिमान रूपी वृक्ष की वृद्धि चाहते हैं वो वात याद करिये कि इन के दयानन्द जी महाराज ने इन्हीं वैदिक धर्म के संरक्षक जिनको सनातन धर्मी भाई ईश्वर का अवतार मानते हैं उनको सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २१६ में पांचवे नास्तिक वताये हैं और पत्र २०० में वेदांतियों की दृष्टि कांणे पुरुष के समान वताई है और पृष्ठ १०१ में कुतर्की व्यर्थ वकने वाले और गपोड़ा हांकनेवाले कहा है पृष्ठ ८४ में परमर्षि मातंगाचार्य को चांडाल कुल से उत्पन्न होना कहा है पृष्ठ २३५ में वेदा~~न्ती~~ महर्षियों को (वाहरे झूठे वेदांतियो तुमने अपने सत्य स्वरूप सत्यकाम सत्य संकल्प परमात्मा को मिथ्याचारी कर दिया क्या यह तुह्मारी दुर्गति का कारण नहीं है) ऐसा कहा है। पृष्ठ २९० में शंकराचार्य का मत अच्छा नहीं लिखा है पृष्ठ २१५ में उन्हीं शंकराचार्य जी को स्वार्थी विद्वान् शब्दों में लिखा है पृष्ठ २१६ में योगवासिष्ट के कर्ता वसिष्ट मुनि को आधुनिक वेदांती लिखा है पृष्ठ २९९ में महा कवि कालिदास को वकरी

चराने वाला लिखा है पृष्ठ ३०२ में राजा भोज के १५० वर्ष पीछे वैष्णव मत चला लिखा है उसके चलाने वाले महर्षि शठकोपाचार्य को कंजर और मुनिवाहन नामा आचार्य को भंगी कुलोत्पन्न होना लिखा है और श्रीमान् आत्माराम जी संन्यासी रचित दयानन्द वि- रोध दर्पण में ऐसा लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी एकादश्यादि महानव्रतों के बताने वाले महर्षियों को कसाई और निर्दयी कहते हैं ॥ ईसाइयों के खुदा को शैतान का शैतान और पैगम्बर मुहम्मद साहबको विषयी इत्यादि और भी अतिघृणित शब्द सम्पूर्ण सम्प्र- दाय को कहे हैं जिनको किसी अवसरपर बताये जायंगे प्यारे भा- इयो ऐसे महर्षि के शिष्य जिन्होंने वडे वड़े आचार्यों पर कुवाच्य करवाल (तरवार) चलाई जैनसम्प्रदाय को बुरा कहें तो आश्चर्य ही क्या है और हमारे आर्य महाशय असत्य बोलनेसे तो जरा भी नहीं हिचकते जैसा कि ता० २४ के आर्यमित्र में लिखा है कि जैनि- यों का पहिला विज्ञापन ता० १४ को आगरे में बटगया विचारिये कि ता० १४ को आर्य महाशयों का पहिला विज्ञापन हमारे पास आया और ता० १५ को हमने उसका जवाब छपवाया क्या आर्योंके नोटिस से पूर्वही १३ ता० को नोटिस हमने रवाना कर दिया जो ता० १४ को आगरे में बटा उसी आर्यमित्र में येभी लिखा है कि खुर्जे के सनातन- धर्मी और जैनी दोनों आर्यसमाज से शास्त्रार्थ करना चाहते हैं कहिये सनातन धर्मियों की इस वक्त शास्त्रार्थ की वातभी थी इसी तरह से पहले नोटिस में हमीसे शास्त्रार्थ का विषय नियत करने को कहा हमने तत्त्व विषय नियत किया पुनः दूसरे विज्ञापन में उसको सहर्ष स्वीकार भी किया अब फिर आप अन्तिम नोटिस में तत्त्व विषय को भी उडाकर जैनमत पर आक्षेप करना चाहते हैं अस्तु जैनसम्प्र- दाय सब तरह से सन्नद्ध है आर्यमहाशय अपने तत्त्वोंका मंडन कर के जैनसम्प्रदाय के तत्त्वोंपर आक्षेप करें जैनी अपने तत्त्वोंका मंडन करते हुए आर्य महाशयों के तत्त्वोंका खण्डन करेंगे वस भाइयो विचार करना है तो करिये और नहीं करना होयतो वृथा कागज रंगकर हमारा और अपना वक्त क्यों खोते हो यदि आर्यमहाशय अपने लेखानुसार मेले के बाद शास्त्रार्थ करना चाहते हैं तवभी हम-

लोग पूर्णतया सुसज्जित हैं तत्त्वविषय तै होई चुका है बस आर्य महाशय जिस तरह से विचार या शास्त्रार्थ करना चाहें हम लोग पूर्णतया कटिबद्ध हैं और यदि नोटिस ही निकालने में कुछ सिद्धि समझी है तब भी हमलोग तयार हैं और जैनियों पर चेलेंज देने का आक्षेप भी निर्मूल है इसका बीजभी आश्विन शुक्ला ३ सं० १९६२ में जैनसम्प्रदाय को वृथा नोटिस देकर आर्यमहाशयों ने ही बोया है और जब सम्पूर्ण सम्प्रदाय अपने व्याख्यान में आर्य महाशयों का खण्डन करती हैं तब तो आर्य महाशय ये कहते हैं कि हमको प्रश्नोत्तर का अवकाश ही नहीं दिया और अब अवकाश दिया तो लिखते हैं कि जैनियों ने हमको क्यों चेलेंज दिया विचारिये ये कैसी भद्दी बात है बस जैनसम्प्रदाय मेले में या मेले के पीछे जैसा आर्य महाशय चाहें अपने तत्वों का मण्डन और आर्य महाशयों के तत्वों का खण्डन पर विचार या शास्त्रार्थ करने के लिये सर्वथा तय्यार है। तत्व उसको कहते हैं कि जिसके अन्तर्गत वस्तुमात्र आजाती है जैसा कि सांख्यने २५ और जैनियों ने ७ नैयायिक ने १६ तत्त्व माने हैं। विचार का अवसर है कि आपके पवित्र वेद में से ही ये आर्य महाशय वेदविरुद्ध व्यभिचार के समान विधवाविवाह नियोग और मूर्तिखण्डन विषय निकाल कर वैदिक मतानुयायी होने की घोषणा करते हैं ये कैसी अनुचित बात है। जैनियों को सदा की भांति मेलाकरना लिखा सो जैनीतो अपने उत्सवों में शंका समाधान का अवसर बराबर जैसे देतेआये हैं वैसे अबके भी दिया था परन्तु अबके आर्यसमाज शास्त्रार्थ का कोलाहल मचा, न जानें क्यों गर्ज रहा है॥ सज्जनवृन्दों विचारिये कि शास्त्रार्थ से भयभीत आर्यमहाशय मध्यस्थ का व्याज लिया करते हैं सो तो जैनियोंने उनकी मर्जी के माफिक पबलिक मध्यस्थ स्वीकार करली। समय का बहाना लेते सो उभय पक्षको समान समय दिया गया जैनमत पर आक्षेप न करने देने का बहाना अन्तिम नोटिस में किया सोभी जैनमतावलम्बियोंने इस नोटिस में खुलासा इजाजत देदी अब देखें क्या प्रपंच लेख निकाल कर रथोत्सव के समय को टालते हैं। सच्चतो ये है कि श्रीमान् जानकी प्रसादजी के समक्ष ता० २४ के आर्यमित्र के बमोजे

हुये शास्त्रार्थ के सब नियम भी कतिपय प्रधान आर्यमहाशय सम्मुख जैनियों ने मंजूर कर लिये थे परन्तु आर्य भाइयों से जब श्रीमान् जानकीप्रसाद जी ने हस्ताक्षर करनेको कहा तब प्रत्येक आर्य महाशय कहने लगे हमें अधिकार नहीं है हमें अधिकार नहीं है प्रत्युतः पबलिक में जोशभरने वाला एक मलीन नोटिस निकाल बैठे इसमें जिनको सन्देह हो तो श्रीमान् जानकीप्रसादजी से निश्चय करलें श्रीमान् जैसे धर्मज्ञ असत्य कदापि नहीं बोलसके बस अब समस्त धर्मज्ञ विद्वान विचारें कि आर्य महाशयों की किंचित् भी शास्त्रार्थ या विचार करने की इच्छा नहीं पाईजाती है केवल असभ्यता के शब्दोंपर उतरकर समय के निकालदेनेकी प्रतीक्षा कररहे हैं अब इस गुप्तरहस्य के विचार का भार हम अपने समस्त सम्प्रदायी भाइयों पर रखते हैं वो विमर्शण करलें कि कौन बचाव की नीति अवलम्बित कर समयको टाल शास्त्रार्थ या विचार को नष्ट किया चाहता है ॥ कृतंविस्तरेण ता० ३०-१०-०६

निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १
जैनसभा खुर्जा

समीक्षक । हमारे इस नोटिस के लेख से विचारियें कि सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी शंकराचार्यजी के साथ कैसा सलूक किया गयाहै फिर उनको मतलब के लिये आज विद्वान् दिग्विजयी महात्मा आदि की पदवी देनी आर्यमहाशयों के विशाल वक्षःस्थल का परिचय नहीं देती है ? परन्तु अफसोस है कि वहुत से हमारे सनातनधर्मी भाई युक्तायुक्त का विचार न कर विना पैंदे के लोटे के नाईं ऊपरी बातों में आकर चाहें जिधर को लुढक जाते हैं ॥ अब हमारे सनातनधर्मी भाइयों के भी शयन के दिन नहीं हैं । विद्याके सन्मुख होना चाहिये अन्यथा स्वल्पकाल में कर मलकर पछताना होगा । अस्तु अब कहिये । आर्यमित्र की दो बातें असत्यार्थ इस नोटिस में हमने, दिखाईं । आर्य मंत्री महाशय ने सत्य करने के लिये कलम उठाने का साहस किया होता । और श्रीमान् जानकीप्रसादजी के यहां आर्य

महाशयोंके आर्यमित्रके लेखानुसार जैनभाई और आर्यभाई एकत्रित होकर शास्त्रार्थ के नियम प्रायः तै करआये थे। और नोटिस निकालना भी नहीं ठहराथा। फिर इतना कड़ा नोटिस निकालना कितनी अनुचित बात है। ऊपर से कुछ कहना अन्तःकरण में कुछ रहना महानुभावों का कर्तव्य कदापि नहीं होसक्ता। पाठक इन्साफ कीजिये हमने कतिपय बात आर्यमहाशयों की ऐसी दिखाई हैं। जिन पर न तो महाशयों ने कलम उठाई और न उठाने का साहस करेंगे जैनधर्मावलम्बियों की एक बात तो ऐसी दिखाई होती। इसपर आर्यमहाशयों की तरफ से निम्न लिखित नोटिस वितरण हुआ॥

॥ ओ३म् ॥

जैनसभा खुर्जा के ३०-१०-०६ के विज्ञापन का प्रत्युत्तर

इस विज्ञापन में हमारे २७ ता० के विज्ञापन को कुवाच्यपूरित बताया है, पर "हमला करना" शब्द में क्या कुवाच्यता है, नहीं बताया। "मेवाराम असभ्य हैं" यह हमारे विज्ञापन में नहीं छपा, लोग पढ़कर देखें, उस में हमने ला० मेवारामजी को "प्रतिष्ठित", "रईस", "पढ़ा लिखा" इत्यादि मान्य के शब्द दिये हैं। समयानुसारिणी सभ्यता में उग्र शब्दों में चेलेंज देने को "उत्तम कोटि" की सभ्यता कहने में तो आप स्वयं भी संकोच मानते होंगे किन्तु 'मध्यमादि कोटि" की सभ्यता भी सभ्यता ही तो है। उसको असभ्यता समझना आप जैन भाइयों की कृपा है॥

सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने मतमतान्तर के विषय में जो कुछ लिखा, यदि वह जैनों के विचार में अनुचित है तो क्या जैनभाई अब उन वैष्णवादि मतोंपर विश्वास करने लगे हैं, जिन से उनका कभी मेल न था, यदि ऐसा हो तो उपमंत्री जैन सभा अगले विज्ञापन में छपादें कि हम को वैष्णवादि सम्प्रदाय वा मत स्वीकृत हैं। इस विज्ञापन में तो आप अपने हिंसा-विरोध और अहिंसा-समर्थन पक्ष को भूलकर मुसल्मान भाइयों और ईसाईयों

को भी हमसे भड़का कर अपनी अहिंसक गोद में बिठाने का यत्न करते हैं, पर खुदा-परस्त मुसल्मान जैनों के जगत्कर्ता न मानने के सिद्धांत की ओर ऊपरी बातों में आकर नहीं झुकेंगे। ईसाई लोग भी ऐसे भोले नहीं हैं। सनातनधर्मी जिन श्राद्धादि को कर्त्तव्य मान ते हैं, जैन उसे न मानते, न करते हैं और आर्यसमाजी तो वेद को मानते हुवे उनसे वेदार्थ पर ही विचार-भेद रखते हैं, पर आप स्पष्ट छपावें कि जैन भाई क्या अब वेद को मानने लगे हैं? क्या जैनभाई राम कृष्णादि महात्माओं की प्रतिमाओं को पूजनीय जानते हैं? यदि मानने लगे हों तो यह नाता जोड़ना अच्छा है कि जैनभाई वेदों को मानने लगें, क्योंकि यही तो समाज चाहता है कि जैन बौद्धादि मनुष्यमात्र वेदको मानने लगें और राम कृष्णादि महात्माओं को सनातन वैदिकधर्म का रक्षक और पालक जानते हुवे शैव, वैष्णव, जैन, बौद्धादि साम्प्रदायिक विरोध को छोडकर एक हो जावें। पर वास्तव में वे ऐसा करें तो भारतवर्ष के जैन उन से अलग होजायेंगे यदि जैन भाई तत्त्व विषय पर ही बात चीत, विचार वा शास्त्रार्थ वा प्रश्नोत्तर करें तो कृपा करके मेले से पूर्व ही अपने ७ तत्त्वों को प्रकाशित करदें, जिनका वह मण्डन करेंगे। इधर आर्यसमाज की ओर से हम ३ तत्त्व जीव, ईश्वर, प्रकृति छपाये देते हैं कि इन का हम मण्डन करेंगे। एक दूसरे के मत में दोष दिखावें और अपने २ मत पर दिये दोषों का उत्तर देकर समाधान करें॥

आर्यसमाज के गिने चुने निर्धन निस्सहाय पुरुष जब आपकी सभा में आवें तो आपको इससे पूर्व अपनी जिम्मेवारी का एक पत्र अपना हस्ताक्षरी समाज के मन्त्री के पास भेजदेना चाहिये और उस में सब प्रकार शांतिरक्षा, हल्ला गुल्ला आदि न होने देने की जिम्मेवारी लेनी चाहिये, क्योंकि थोडे से आर्योंको आप जैन श्रीमानों की योग्यता के विश्वास और वेदधर्म की श्रद्धा के सिवाय (जिसके बल पर "निर्बल का बल धर्म' मान कर आर्य लोग आवेंगे) अन्य धन जन आदि का बल कमसे कम खुर्जे में नहीं है। हां, सत्य का बल है, जिस से आर्य लोग यह हिम्मत करते हैं, शास्त्र के बल के लिये बाहर से विद्वान बुलाये जावेंगे जिन्हों ने आना स्वीकार कर

लिया है । पं० मेवारामजी के खुर्जा में विराजते हुवे "नैयायिक ने १६ तत्त्व माने हैं," लिखा जाना आश्चर्य है । क्योंकि—

१ प्रमाण २ प्रमेय ३ संशय ४ प्रयोजन ५ दृष्टांत ६ सिद्धान्त ७ऽवयव ८ तर्क ९ निर्णय १० वाद ११ जल्प १२ वितण्डा १३ हेत्वाभास १४ छल १५ जाति १६ निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निश्रेयसाधिगमः ॥ १ ॥ न्यायद० इस में तत्त्व शब्द नित्य द्रव्यवाचक नहीं है, किन्तु भाववाचक है, जिस के टीकाकारों ने स्पष्ट कहा है कि तत्त्वज्ञान और मोक्ष का तथा शास्त्र और तत्वज्ञान का हेतु-हेतुमद्भाव सम्बन्ध, प्रमाणादि १६ पदार्थों और तत्त्वज्ञान का विषय-विषयिभाव सम्बन्ध, प्रमाणादि १६ और शास्त्रका प्रतिपाद्य-प्रतिपादकभाव संबंध और शास्त्र और मोक्ष का प्रयोज्य-प्रयोजकभाव संबंध है। इत्यादि से सब कोई जानसक्ता है कि १६ तत्त्व नहीं माने हैं। यदि १६ पदार्थ-तत्त्व अभिमत होते तो "तत्त्वज्ञानात्" से "पूर्व" प्रमाण स्थानानां" में षष्ठी अनुपपन्न होती। भला ३ संशय ८ तर्क ११ जल्प १२ वितण्डा १३ हेत्वाभास १४ छल और १६ निग्रहस्थान जैसे पदार्थों को "तत्त्व" की पदवी आपके सिवाय कौन देगा ?

मेले के पश्चात् किसी तिथि का निर्देश जैनसभा ने नहीं किया अतः मेले परही यह विचार होना संभव जान पडता है । समाज समय न बिता देगा, परन्तु आप समय से पूर्व ऊपर लिखी जिम्मेवारीका प्रबन्ध करके सूचना दीजिये। समय थोडा है, शीघ्रता कीजियेगा। बार २ विज्ञापन देने मात्र से कार्यसिद्धि न होगी। समाज के मन्त्री को आपने जो मनुष्यत्व से गिरा लिखा है, हमतो यहभी आपकी कृपाही मानते है क्योंकि माननीय और प्रतिष्ठित भाई (जो केवल कुछ काल से वेदों से बिछुडे हैं, पर वास्तव में वंशपरंपरा से हमारे भाई हैं. फिर उन भाइयों के कहे का बुरा क्या मानाजावे ? ता० ६ से पूर्व कृपा करके शास्त्रार्थ कराना वा करना है तो मेजिस्ट्रेट जिला से आज्ञा लेकर शांतिरक्षा का पूरा प्रयत्न करके अपनी हस्ताक्षरी चिट्ठी भेजने में ढील वा चूक न करनी चाहिये। आर्यसमाज के विद्वान् ता० ७-८-९ को खुर्जा में उपस्थित रहकर शास्त्रार्थ वा विचार की प्रतीक्षा करते रहेंगे ॥ २-११-०६

लोकानन्द गार्ग्य मन्त्री आर्यसमाज खुर्जा

समीक्षक। विचारिये इस नोटिस में 'जैनभाई अब उन वैष्णवादि मतोंपर विश्वास करने लगे हैं, इत्यादि लेखसे जैनियों के विज्ञापन का उत्तर हागया या नहीं। हमारि समझ में तो नोटिस निर्माण समय निर्माता का ज्ञानकारणमनःसंयोग किसी दूसरे ही पदार्थ से था। अन्यथा ऐसी मनमानी आल्हा काहेको गायी जाती। जैनियों ने वैष्णवादि मतों के आचार्य और परमात्मा को कुवाच्य कहना अनुचित समझा तो क्या जैनी वैष्णव हागये। और वाकी महाशय जी अपने आप जैनियोंको वैष्णव वना उपमंत्री जैनसभा को नोटिस छपाने का हुकुम सा भी सुनादिया। धन्य आपका लेख कौशल्य॥ महाशयजी इतना वैमनस्य क्यों। आप ही जगत्कर्तृत्व अंकसे अंकित मुसल्मान महाशयों को अंक में विठा अलंकृत हूजिये। पाठक पूर्वोक्त नोटिस के (पर आप स्पष्ट छपावें यहांसे लेकर जैन उनसे अलग होजायंगे वहांतक) लेखपर गौर कीजिये। आर्यमहाशय खडे हुए थे जैनियों के गेरने को। गिरपडे आप। आपके लेख से श्रीरामचन्द्र जी आदिकी मूर्त्ति के पूजक ही वेदको मानने वाले ठहरे तो आर्य महाशय रामकृष्णादि महात्माओं की मूर्त्ति को न मानने वाले अवैदिक मतानुयायी ठहरे। फिर आपको वैदिक मतकी घोषणा करनी वन्ध्या के पुत्र की आशा करनी है। जरा संभालिये। निम्नोन्नतमार्ग में ठोकर न खाइये। अभी जैनधर्म्मावलम्बियों से बहुत कुछ वार्ता करनी होगी। पाठक हमारे इस लेख को और आर्यमहाशयों के अंतिम विज्ञापन के पूर्वोक्त लेखको सम्यकया विचारें। आर्यमहाशयों की लेखनी जवरन सत्य की तरफ चलीगई। पाठक विचारें आर्य महाशय अपने तीन तत्त्व क्यों प्रगट करने लगे। वो जानते हैं हमारे स्वामी जी महाराजने तत्त्वों की स्थिति ही न रहने दी है। कहीं सात कहीं तीन जहां जैसे काम चला है चला ले गये हैं। अस्तु भाइयो इसी नोटिस में जब जैनियों के ऊपर छोड दिया कि हल्ला गुल्ला का प्रवन्ध करें। तो फिर जिलाधीश की आज्ञा का अडंगा क्यों रोपा गया। वस भाइयो वात येहै कि पहले हमारे आर्यमहाशयों ने समझा था कि जैनियों के शिरपर शांतिरक्षा का भार धरेंगे तो जैनी अपने मेले में बखेडे के सववसे अपने ऊपर भार न लेंगे तो शास्त्रार्थ न

होगा। परन्तु महाशयों की तो कुशाग्र बुद्धि है। फिर सोचा कि शायद जैनियों ने ये मंजूर करलिया तो फिरभी शास्त्रार्थ की बला शिर से न टली। अतः ऐसी युक्ति निकालिये जिससे बातकी बात रहजाय और शास्त्रार्थ भी न करना पड़े। वस क्या था अनायास ये युक्ति सूझपडी कि जिलाधीशकी आज्ञा विना शास्त्रार्थ नहीं हो सक्ता॥ क्योंकि आर्यमहाशय जानते थे न तो जैनी मजिस्ट्रेट साहब के भयसे दरख्वास्त देंगे और न शास्त्रार्थ होगा॥ और दरख्वास्त भी देंगे तो मजिस्ट्रेट साहब इन के मेले के अवसर पर कभी हुकुम न देंगे क्योंकि जैनियों के मेले ही को वडी कोशिश से हुकुम होता है। दूसरी युक्ति येभी विचारी कि मजिस्ट्रेट साहब की आज्ञा लेनी लिखा देनेसे कोई प्रधान पुरुष विना साहव वहादुर की आज्ञा के मध्यस्थ भी न वनेगा। वस अव हमारी पोवारह है। इधर पंडितों को बुलालेंगे उधर मध्यस्थ का वहाना होजायगा। शास्त्रार्थ का शास्त्रार्थ न करना पड़ेगा और पंडितों के आने की धमकी भी दिखाई जाइगी। वस विजयपताका उड़ा लेंगे। ऐसा विचार कर मजिस्ट्रेट साहवकी आज्ञा का व्याज लिया होगा॥ पाठक विचारिये स्नेह पूर्वक निर्णय करने में आज्ञा लेने की क्या आवश्यकताथी। प्रेमभाव से शास्त्रार्थ था या शस्त्रार्थ। विद्वान् भाई भाइयों में कभी लड़ाई नहीं होसक्ती॥ और फिर पहले आर्यमहाशयों से ईसाई साहवों का शास्त्रार्थ होचुका है उसमें आर्यमहाशयों ने जिलाधीशकी आज्ञा लेने को क्योंन कहा जो अव जैनियों से कहते हैं। अस्तु अव राजकीय आज्ञालेनी आवश्यक वातहै। पाठक स्वयं इसका निष्कर्ष निकालें हम क्या विशेष लिखें॥ यदि आर्यमहाशय पहलेही कहदेते कि हमारी इच्छा विचार करने की नहीं है तो जैनसम्प्रदाय अन्य नगरस्थ आप ने जैनी भाइयों को विचार का निमंत्रण दे क्यों लज्जित होती॥ खैर इसके उत्तर में जैनियों का निम्न लिखित प्रत्युत्तर वितरणहुआ

॥ श्रीः ॥

आर्यमहाशयों के ता० २ नवम्बर के विज्ञापन का प्रत्युत्तर

इस अन्तिम विज्ञापन के अवलोकन से यह तो हम को पूर्णतया

प्रतीत होगया कि इस से पूर्व जो आर्यमहाशयों के विज्ञापन निकले हैं उनका निर्माता कोई कलह प्रिय (नारद) ही महानुभाव है यदि पहले विज्ञापनों का निर्माण भी इस शांति प्रिय हमारे सुहृद्वरके हस्त गत होता तो व्यर्थ विज्ञापन न रंगकर उस शांति से उभयपक्ष का विचार होता कि जिससे जिज्ञासु पुरुष सत्य धर्म का निर्णय कर मनुष्य जन्म सफल करते अस्तु अब हम अपने मित्रवर से यह पूछना चाहते हैं कि शांतता के लिये प्रश्नोत्तर शब्द से कहे हुए विचार को हटाकर आधुनिक शास्त्रार्थ (वितण्डा) का कोलाहल मचा जैनसम्प्रदाय को शास्त्रार्थ से भयभीत किसने बता अशांति के भय से जिलाधीश को सूचना देनेका अंकुर जमाया बस हमको इस विज्ञापन से ये भी प्रतीत होता है कि आर्यमहाशयों के चित्त में कलहांकुर का भी प्रादुर्भाव होगया है यदि ऐसा ही है तो जिला-धीश को आर्यमहाशय दरख्वास्त देकर आज्ञा लें यदि हम जिला मजिस्ट्रेट को दरख्वास्त दें और वो नामंजूर करें तो हमारे आर्य महाशयों को शास्त्रार्थ या विचार न होने देने का कलंक जैनसम्प्र-दाय के शिरपर धर पुनः स्वाभाविक प्रकृति प्रकट करने का अव-काश मिलजाइगा। महोदय येभी कहिये कि ईसाईयों के साथ जो आर्यसमाज खुर्जाका शास्त्रार्थ हुआ था उसमें राजकी आज्ञा किसने लीथी यदि हमारे आर्यभाइयों की अन्तरंग इच्छा कुछ निर्णय करने की हो तो नोटिस की छापा छाप बन्द करदो या एक प्रधान पुरुष हमारे रथोत्सव के पूर्व या पश्चात् जैसा मुनासिब समझें उपस्थित होकर श्रीमान् जानकीप्रसादजी आदि किसी नगरके प्रतिष्ठित पुरुष के समक्ष सम्पूर्ण नियम तै करलें॥ नोटिसों के रंगने से तो नियम तै न होकर हमारे आर्य महाशयों की शास्त्रार्थ या विचार करने की अन्तरीय कामना कम सी ही प्रतीत होती है। सद्युक्तियों के द्वारा अन्य मतानुयायियों का खण्डन न कर स्वामी जी की प्रत्येक सम्प्र-दायपर कुवाच्य वर्षा जैनसम्प्रदाय अवश्य अनुचित समझती है और छपाने को भी तय्यार है। (सनातनधर्मी जिन श्राद्धादि को कर्तव्य मानते हैं जैन उसे न मानते न करते हैं और आर्यसमाजी तो वेद को मानते हुए उनके पदार्थपर ही विचार भेद रखते हैं) इस

लेख से प्रतीत होताहै कि हमारे आर्य महाशय श्राद्धादि को मानते हैं जिसका खण्डन स्वामी जी महाराज ने पूर्णतया किया है। प्यारे महाशयों वेद के पदार्थों को न मान वैदिक ऋचाओं का मनमाना अर्थकर वैदिक धर्मानुयायी से एकता का बीड़ा उठाना कितनी अनुचित बात है मूर्ति पूजन मोक्षादि विषय बहुत मिलने पर द्वेषाग्नि निर्मूल करने के लिये जैनसम्प्रदायने वैदिक धर्मानुयायियों से एकता दिखाई तो हमारे सहृदय आर्यमहोदय चिडकर क्यों दोनों सम्प्रदायों को भडकाते हैं। एकता करना तो आर्यमहाशयों का भी प्रथम कर्तव्य है। जीव १ अजीव २ आश्रव ३ बंध ४ संवर ५ निर्जरा ६ मोक्ष ७ ये जैनियों के सात तत्त्व हैं आर्यमहाशयों के ३ या ७ तत्त्व हैं ये विचार उन्हीं के ग्रन्थानुसार शास्त्रार्थ समय किया जायगा। आपके लेखानुसार नैयायिक के १६ तत्त्वोंपर विचार करना केवल समय विताना है आप जानही गये होंगे कि दृष्टांतत्त्वेन षोडश पदार्थ उपादेय थे न कि युक्तिमत्तया। तत्त्वकी पदवी आपके सिवाय कौन देगा ऐसे हास्यापद वाक्यों का तो बुराही मानना क्याहै यहतो प्रत्युतः सुहृत्ता को अलंकृत ही करते है। किमधिकम्

ता० ३-११-०६

निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १
जैनसभा खुर्जा

समीक्षक। विचारिये जैनमेले में सम्प्रदाय की तरफ से मजिस्ट्रेट साहब को दरख्वास्त जानी कितनी अनुचित बात है। जैन सम्प्रदाय ता मजिस्ट्रेट साहब का नाम सुनते ही डरगई। क्योंकि बड़ी कोशिस करने पर न्यायशील गवर्नमेंट के प्रभाव से जैनियों को अपनी मजहबी रसूम अदा करने का अवसर मिला है। फिर उसमें कोई झगडा पैदा करलेना जैनियों को सर्वथा अयोग्य है अतएव मजिस्ट्रेट साहब को दरख्वास्त देने से जैनियों ने इनकारकिया बस जैनियों के इस अन्तिम नोटिस का प्रत्युत्तर आर्यमहाशयों की तरफ से कुछ न मिला। प्रत्युतः मगसिर वदी ४ ता० ५ नवम्बरको

रात्रिको आर्य पं० मुरारीलाल जी का शुभागमन सुन मेवारामजी आदि श्रीमान् जानकीप्रसादजी के मकानपर गये। और मेवारामजी ने उक्त श्रीमान् से कहा कि पं० मुरारीलाल जी आये सुने हैं। यदि वो विचार या शास्त्रार्थके नियम स्थिर करना चाहें तो बुलालीजिये श्रीमान् ने कहा कि वो नियम ही तै करनेके लिये आये हैं सो उसी वक्त उक्त पं० जी के आह्वानार्थ मनुष्यप्रेषण किया गया। और पं० महाशय बहुत देर बाद कतिपय आर्यमहाशयों के साथ आये। और समयादि पं० मुरारीलाल जी और मेवारामजी की सम्मति से नियत किया गया॥ और श्रीमान् जानकीप्रसादजी के बीमार होने से मध्यस्थ उभयपक्ष की सम्मति से रायबहादुर श्रीमान् नत्थीमल जी को माना। और उनसे स्वीकार कराने के लिये बुलाने को मनुष्य भेजा गया। पश्चात् पं० मुरारीलाल जी बोले कि तत्त्वविषय पर एकदिन ही शास्त्रार्थ करेंगे अवशिष्ट दिनों में अन्य विषय पर शास्त्रार्थ होगा। मेवारामजी ने कहा कि तत्त्वविषय हमारा नोटिस द्वारा तय होचुका है। ये समाप्त होनेपर दूसरा विषय लिया जायगा इस पर पं० मुरारीलाल जी ने कहा कि हम तो इस विषय पर एक रोजसे ज्यादे शास्त्रार्थ न करेंगे। इसपर दोनों तरफ से बहुत बहस होती रही। तिसपर श्रीमान् जानकीप्रसादजी ने पं० मुरारीलालजी से कहा कि तत्त्वविषय ऐसा नहीं है जो एक रोज में तय होजाय॥ अतः आपको सबदिनों में तत्त्वविषयपर ही शास्त्रार्थ करना चाहिये उक्त पं० जी के फिरभी न माननेपर श्रीमान् ने मेवारामजी से कहा पं० मुरारीलाल जी की मर्जी तत्त्वविषयपर एकरोज से अधिक शास्त्रार्थ करने की नहीं है॥ तुम क्यों फिजूल आग्रह करते हो। तिस पर मेवारामजी ने कहा तत्त्वविषय ये निर्णय करचुके हैं। फिर क्यों हटते हैं। पश्चात् मुरारीलाल जी ने कहा कि शास्त्रार्थ करिये चाहें न करिये तत्त्वविषयपर एकरोज ही होगा। फिर श्रीमान् ने कहा कि पं० मुरारीलाल जी की मर्जी तत्त्वविषय पर शास्त्रार्थ करने की नहीं है॥ शास्त्रार्थ मुल्तवी रहा। उभयपक्ष के भाई अपने अपने स्थान पर पधारे। सम्पूर्ण समुदाय उठने को ही था कि श्रीमान्

रायबहादुर नत्थीमलजी आपहुंचे ॥ उनसे कहा गया कि आपको मध्यस्थ बनाने के लिये तकलीफ दीगई थी परन्तु अब शास्त्रार्थ मुल्तवी होगया। उसपर रायबहादुरजी ने कहा कि आर्यमहाशयों ने मजिस्ट्रेट साहब से आज्ञा लेना लिखा है ॥ अब मैं साहब बहादुर की आज्ञा के विना कदापि मध्यस्थ नहीं बनसका। और न किसीको बनने की सम्मति दूंगा। ये बहुत झगड़ेकी बातहै। ये सुनकर पं० मुरारीलाल जी बोले कि रायबहादुर जी मध्यस्थ बनजांय तो हम तीनों दिन तत्त्वविषय पर ही शास्त्रार्थ करने को तयार हैं। रायबहादुरजी ने मध्यस्थ बनना स्वीकार नहीं किया। अतः शास्त्रार्थ मुल्तवी ही रहा। और सब अपने अपने स्थान पर चले गये परन्तु पाठक पं० मुरारीलाल जी का बुद्धि कौशल्य देखिये कि मध्यस्थ न होने से शास्त्रार्थ को मुल्तवी निश्चय कर भड़ाके से बोल उठे कि हम तीनों दिवस तत्त्वविषय पर शास्त्रार्थ करने को तयार हैं ॥ यदि पं० जी तत्त्वविषय के शास्त्रार्थ से नहीं हटते थे तो रायबहादुरजी के आगमन से पूर्व क्यों न स्वीकार करालिया पाठक इस रहस्य को विचार कर निर्धारित करें कि किसकी पक्ष निर्बल हुई। यदि किसी भाई को उपर्युक्त बातों में सन्देह हो तो उक्त रायबहादुर श्रीमान् नत्थीमलजी व श्रीमान् जानकीप्रसादजी को पत्र देकर निर्णय करलें। जैनसभा का सभासद उपर्युक्त बातें नोट करता गयाथा। अस्तु जैनसम्प्रदाय शास्त्रार्थ के निषेधरूप बज्र प्रहार को सह उदास हो बैठरही। तीसरे दिन मगसिर बदि ६ ता० ७ नवंबर को दिनके १॥ बजे सभा प्रारम्भ समय फिर एक चिट्ठी आर्यमहाशयों की आई ॥ जिसकी नकल ये है।

॥ ओ३म् ॥

सं० १९६९ आर्यसमाज खुर्जा

७-११-०६

श्रीमान् महाशय ! पं० मेवारामजी योग्य मन्त्री जैनसभा खुर्जा निवेदन यह है कि आपके "रामलीला" के चेलंज, और अबतक छपे विज्ञापनों के आधारपर आर्यसमाज खुर्जा ने आर्य विद्वान् बुलाये हैं,

खुरजे में विराजमान हैं। अब कृपा करके लिखिये कि जैन और आर्यों के परस्पर विप्रतिपन्न विषयों में से कई विषयों पर शंका समाधान विचार वा प्रश्नोत्तरादि करने के लिये हमारे विद्वानों को के बजे से अवसर दीजियेगा॥ कृपया यहभी सूचित कीजियेगा कि आर्य विद्वानों के विठलाने आदि के लिये अपने समुचित प्रबन्ध कर लिया है। अनुग्रह पूर्वक अपने व्याख्यानों के आरम्भ से पूर्व उत्तर दीजिये। यदि आप यह विचारें कि अभी नियम स्थिर नहीं हुए तो जब साधारण प्रश्नोत्तरादि होना है तो किन्हीं लम्बे चौडे बहोत नियमों की आवश्यकता भी न पडेगी आप हम परस्पर सम्मति से उसी समय एक सभापति नियत करके नियम बनालेंगे और अनन्तर विचार आरम्भ होजाइगा।

आपका सुहृद् मंत्री लोकानन्द गार्ग्य

समीक्षक॥ येतो आपको आर्यमहाशयों की अन्तिम चिट्ठी से भी ज्ञात होगया होगा कि आर्य विद्वान तत्त्वविषयपर शास्त्रार्थ करना किंतेही नहीं चाहते। अन्यथा जिस तत्त्वविषयकी महीनों से धूम होरही थी उसको दबाकर ये प्रश्न क्यों किया जाता है कि 'जैन और आर्य के परस्पर विप्रतिपन्न विषयों में से कौन कौन विषयों पर विचार होगा'। सचतो येहै कि तत्त्वविषयपर शास्त्रार्थ करना जरा टेढ़ी खीर थी अतः आर्यमहाशयों के जो विद्वान आये वो इस विषय को दबाने ही की फिकर में रहे। यदि आर्य महाशयों ने पहले लेख द्वारा ये विषय स्वीकार न करलिया होता तो साफ उड़ जाता। फिर आर्य महाशय इस चिट्ठी में लिखते हैं यदि आप विचारें कि अभी नियम स्थिर नहीं हुए तो अब हम और आप कर लेंगे ये लिखना आर्य महाशयों के अति गम्भीर विचारका परिचय देता है। क्यों साहब पंडित मुरारीलाल जी क्या पूर्व वार्षिकोत्सव में आये हुए पंडित महाशयजी की भांति प्रयाण करगये जो ये बात हमको लिखी गई वो महात्माजी तो शास्त्रार्थ का बिलकुल निषेध करआये थे जैसा कि पाठकों को पूर्व लेख से विदित हुआ होगा। पं० मुरारीलाल जी के रहने पर हमसे जानबूझ कर ये कहना आर्य

मंत्री महाशयकी कितनी दूरदर्शिता को प्रगट करता है। अस्तु इस के प्रत्युत्तर में जैनसम्प्रदाय की तरफ से निम्न लिखित पत्र गया।

॥ श्रीः ॥

नं० ८ श्री० मंत्री आर्यसमाज खुर्जा जयजिनेन्द्र

पत्र करीब १॥ बजे दिनके मिला। अफसोस है कि इसी लिखा पढ़ी में करीब एकमास वीतगया अभीतक आप विषयही को पूछते हैं हमारे आपके केवल तत्त्वविषय विज्ञापन द्वारा तै हो चुका है। और आम पबलिक जानती है। आपके पं० मुरारीलालजी वगैरः सोमवारकी रात्रि को श्रीमान् जानकीप्रसाद जी के यहां तत्त्वविषय पर विचार को मनें करआये थे। अतः जैनसम्प्रदाय ने कुछ बंदोवस्त नहीं किया। अब हमारा व्याख्यान प्रारम्भ होने ही को है॥ आप अबभी चाहें तो शाम को ६ बजे आकर या श्रीमान् जानकी प्रसादजी के यहां हमलोगों को बुलाकर शास्त्रार्थ के नियम तै कर लीजिये। इस विषयके खण्डन मण्डन के लिये हम हमेशा कटिबद्ध हैं। समाप्तम् ता० ७ महीना नवम्बर सन् १९०६

दस्तखत जैनगायन उपमंत्री नं० १ जैनसभा खुर्जा

समीक्षक॥ जब शास्त्रार्थ के लिये बिलकुल निषेध कर दिया गया फिर दो दिवस बीच में सोकर ऐन सभा समय आर्यमहाशयों का पत्र देना कितनी शास्त्रार्थ की इच्छा प्रगट करता है। और जिस शास्त्रार्थ का शोर महीनों से खुर्जे ही में नहीं समस्त दूर देशांतरमें बड़े जोशके साथ फैला हुआ था। और अशांति के भय से आर्य महाशय जिलाधीश की आज्ञा बिना शास्त्रार्थ का निषेध भी करचुके हैं उसके लिये सभा समय मध्यस्थ और जिलाधीश की आज्ञादि का प्रबन्ध होना उभयपक्ष की सम्मतिसे कितैही असम्भव है। अतएव हमने इस चिट्ठीमें लिखा है कि जैनसम्प्रदायने कुछ बन्दोवस्त नहीं किया यदि आप अबभी चाहें तो शामको ६ बजे नियम तै कर लीजिये। जिसपर २४ नवम्बर के आर्यमित्र पत्रने जैनियोंपर गुड्डा बांध मनमाना लेख लिखा है। जिसको नकल अपनी तरफ से कुछ

नमक मिरच लगा वेदप्रकाश में सम्पादक महाशयजी ने कीहै जिस को प्रायः आर्यभाइयों ने तो देखा ही होगा परन्तु अन्य भाइयों के अवलोकनार्थ कुछ सारांश हम यहांपर लिखते हैं युक्तायुक्त विचार कर सत्यका निर्धार करालिया जाय। 'जैनियों के इस उत्तर को पाकर और इसमें के इन शब्दों को पढकर कि जैनसम्प्रदाय ने कुछ वन्दोवस्त नहीं किया। आर्यसमाज को विश्वास नहीं रहा कि अव जैनभाई शास्त्रार्थ करेंगे क्योंकि जिस वातको वे एकमास पूर्व से अपने विज्ञापनों में प्रकाशित कररहे थे और उभयपक्ष से तयारी होरही थी उसको एकदम त्यागकर लिखदेना कि 'जैनसम्प्रदाय ने कुछ वन्दोवस्त नहीं किया' पाठकों को आश्चर्य में डालैगा। पाठक विचारिये इस लेखका रहस्य क्या सचमुच जैनियों के पत्रका येही मतलव है कि हम शास्त्रार्थ न करेंगे। जैसा कि उपर्युक्त आर्यमित्र के लेखसे टपकता है। यदि जैनसम्प्रदाय को शास्त्रार्थ न करना होता तो शाम के ६ वजे नियम तै करने को क्यों लिखा जाता फिर सम्पादक महाशयजी लिखते हैं कि "श्रीमान् पं० मेवारामजी रईस जैन विद्वान् की उपस्थिति और उच्चपदाधिकारी तीन यूरूपियन सा-हवों का जैनसभा मण्डप में विराजमान होना इतने वड़े सौभाग्य के अवसर में जैनसभा की चिट्ठी में ये शब्द लिखे गये कि जैनस-म्प्रदाय ने कुछ वन्दोवस्त नहीं किया॥ पाठक सोचो तो सही कि कौनसा वन्दोवस्त करने को शेष रहगया इसपर प्रथम तो नियम सव विज्ञापनों में ही निश्शेष होगयेथे क्या कोई नियम शेष रहाथा? परंतु जैनसभाने प्रोग्राम वाले विज्ञापनमें जो पूर्व प्रतिज्ञाओंके विरुद्ध नई शर्त लगादी थी कि नियम स्थिर होजाइंगे तो तत्त्वविषयपर प्रश्नोत्तरादि होगा इस नये वहानेके उत्तर में समाज ने अपने आप ही लिखदिया था कि उसी समय सभा में ही नियम स्थिर होकरके विचार आरम्भ होजाइगा उसपरभी जैनसभा ने ध्यान नहीं दिया"

समीक्षक। आर्यमित्र सम्पादक महाशयजी का विलक्षण और है जो वे सिर पैरकी वात को लेउड़ने में जरा नहीं हिचकते॥ जव आप के पं० जी महाशय ने शास्त्रार्थ को मनेही करदिया था तो

यूरूपियन साहवों आदिके आगमन रूपी सौभाग्य को आपने खोया या हमने। और पाठक अन्तिम नोटिस तक देखिये नियम तै करने की घोषणा होरही है या नहीं। और विशेषकर आर्यमहाशयों लिखित जिलाधीश की आज्ञारूप शास्त्रार्थ का मूलोच्छेदक प्रधान नियम कव किस नोटिस में तै होचुका है॥ उसकी उत्थानिका के वाद तो आर्यमहोदयों ने जवावही नहीं दिया। पाठक विचारें सत्यासत्य॥ और जव नोटिसों में नियम तै होचुके थे तो पं० मुरारीलाल जी ने श्रीमान् जानकीप्रसादजी के यहां जाकर ये क्यों कहा था कि पं० मेवारामजी को वुलाकर नियम तै कराधीजिये पूछिये श्रीमान् से। और एक पत्र भी उसी समय लिखकर मेवारामजी को श्रीमान् के समक्ष दिया था कि नियम तै करलीजिये। मेवारामजी ने तो परिपाक सोचकरही लेख लेलिया था। अस्तु अव हम नियम तै न होने का कितना वडा सवूत देते हैं देखिये और निर्वल पक्षका निर्धार कीजिये। आर्यमहाशयों की जो ७ ता० की अन्तिम चिट्ठी आई है उस में लिखा है कि जैन और आर्यों के परस्पर विप्रतिपन्न विषयों में से कौन कौन विषयों पर शास्त्रार्थ होगा॥ पाठक आर्य महाशयों के लेखानुसार जव नियमों का मूल नायक विषयही का निर्धार नहीं हुआ तो और नियमों की क्या वात। (मूलंनास्तिकुतः शाखा) और जो विषय नियत होगया तो पूर्वोक्त चिट्ठी में प्रश्न झूंठा। दो में से एक वात सत्य है। अव पाठक आर्यमित्र के लेखानुसार ये भी विचारें कि प्रोग्राम वाले विज्ञापन में जैनियों ने पूर्व प्रतिज्ञा के विरुद्ध नई शर्तें लगाकर वहाना किया है या सम्पादक जी महाराज का वेतुका लेखविन्यास है॥ फिर आप लिखते हैं "आर्य महाशय ये सोचकर कि यदि हम विचारोपयोगी ग्रन्थों और पंडितों सहित जैनसभा में उपस्थित होकर साक्षात् विनयपूर्वक निवेदन करेंगे तो अनुमान है कि जैनभाई हमें सन्मुख उपस्थित पाय निराश न करेंगे यह विचारकर आर्यलोग समस्त ग्रन्थोंको साथ लेकर पंडितों सहित जैनसभा मण्डप में उपस्थित हुए" संपादक जी महाराज ज़रा अपने हृदय कमल पर हस्तार्पण कर कहिये कि

ता० ७ को करीब दिनके ३॥ वजे आर्य विद्वान् वहुत से पोथों की गठरियों से सुसज्जित अनेक आर्यमहाशयों सहित सभा मण्डप में आपके पूर्व लिखित भाव से पधारे थे या हम शास्त्रार्थ के न होने देने वाला अडंगा अन्तिम विज्ञापन में रोपही चुके हैं और पं० मुरारीलालजी श्रीमान् जानकी प्रसाद जी के यहां अपनी विशद मति पूर्वक मध्यस्थभाव से शास्त्रार्थ का अभाव निश्चय कर ही आयेहैं अव डरपोक जैनसम्प्रदाय कलह की सम्भावना कर मेलेके विगडने के भयसे विना राजकीय आज्ञा प्राप्त करे कव शास्त्रार्थ करसक्ती है और सभा समय दरुख्वास्त देकर हुकुम लेलेना सर्वथा असम्भव है चलो अव आम पवलिक में दिखाते हुए विगडी विगडाई वात को अरातो संभाल आवें इस भाव से ॥ परन्तु प्यारे भाइयों सम्भाले से क्या सम्मलती है विद्वान जौहरियों ने तो सच्चे झूंठे रत्नकी परीक्षा करही ली। अस्तु सभा मण्डप में आर्य विद्वानों को स्वागतकारिणी कमैटीने अति सम्मान से विठाये। और मेवारामजी ने व्याख्यान प्रसंग से उभयपक्ष के नोटिस सुनाने आरम्भ किये। और आम पवलिक के समझने के लिये गूढार्थ शब्दों का सरलार्थ करते हुए आर्यमहाशयों के नोटिसों का विरोध भी दिखाया॥ इसी को सम्पादक जी महाशय ने मनमानी टिप्पणी चढाना वताया है अस्तु मेवारामजी के नोटिस सुनाते समय आर्य पंडित तुलसीरामजी स्वामी तो शनैः शनैः बोलकर नियम विरुद्ध समीपस्थ भाइयों को अनधिकार चर्चा का परिचय देही रहेथे कि एक आर्य महापुरुष ने वडे जोरसे ये कहकर कि जैनीभी तो वहुत वड़ी वडी जूं मानते हैं पानी में लट्ठ मारा। सुनतेही समस्त उपस्थित आर्यमहाशयों ने कहा कि आपको व्याख्यान के वीच में कदापि नहीं वोलनां चाहिये ये कायदे वाहर वात है॥ तिसपर पं० तुलसीराम जी ने कहा कि ये आर्य नहीं है। उत्तर में हमारे पूर्वोक्त महापुरुषजी ने कहा कि मैं आर्य सभासद हूं तुलसीराम जी असत्य कहते हैं। पंडितजी ही को पहले वोलता देख वीच में वोल उठा। सगोत्र कलह रूप इस हास्यास्पद नाटकको देख सभा चकित रहगई। फिर थोड़ी देरवाद पं० मुरारीलालजी ने कहा हमको भी व्याख्यान के लिये समय

मिलना चाहिये ॥ मेवारामजी ने कहा सायंकाल आनकर नियम स्थिर करलीजिये । फिर वरावर समान समय से विचार कीजिये । अब आप के चित्त में स्नेह परम्परा न्यून होगई है शांतिरक्षा के प्रवन्ध किये विना शास्त्रार्थ होना योग्य नहीं । पाठक इसपर हमारे सम्पादक महोदय लिखते हैं कि मेवारामजी ने कुछ सुनाई नहींकी और स्वीकृत विचार के लिये अवकाश नहीं दिया । क्या जैनविद्वानोंने भांग पीली थी जो उन्हीं के लेखानुसार विना मध्यस्थ और जिलाधीश की आज्ञा प्राप्तकरे शास्त्रार्थ करने को उद्यत हो जैन मेले में विघ्न डाल धर्म में क्षति पहुंचाने क्योंकि सं० १९३२ के सालकी व्यथा अबतक दुखित कररही है। फिर सम्पादक महाशयजी लिखते हैं कि "जैनियों के कथनानुसार आठ वजे आर्यमहाशय उपस्थित हुए श्री[illegible] मेवारामजी ने प्रथमही पवलिक मध्यस्थ मानकर भी एक ऐसे [illegible] सभापति की आवश्यकता वताई कि जो किसी पक्षवाले को प्रकरण से वाहर जाता समझकर रोकदे। और प्रकरणान्तर में जानेवाले का पक्ष गिरा वतासकै। जव ऐसा पुरुष दोनों ओर से कोई सम्मत न होसका तो कहा कि जिलाधीश साहव से वा कायदा आज्ञा प्राप्त होजावै तो ऐसे सभापति के विना भी शास्त्रार्थ करना हमको स्वीकृत है (ध्यान दीजिये कि जिलाधीश की आज्ञा प्राप्त होनेपर प्रकरणज्ञ विद्वान् की क्यों आवश्यकता नहीं है क्या इसलिये कि एक न एक अनहोनी वात वीचमें अड़कर शास्त्रार्थ को टालदे) पाठक पूर्व लिखित लेखसे यह तो स्पष्ट तया प्रतीत होगयाहोगा कि आर्यमहाशयभी प्रकरणज्ञ विद्वान् के मध्यस्थ हुए विना किसी तरह शास्त्रार्थ करना नहीं चाहते थे। और उभय पक्षकी सम्मति से उस समय मध्यस्थ भी निर्धारित न होसका था फिर इसी आर्यमित्र में सम्पादक महाशय का ये लिखना कि जैन भाइयों ने शास्त्रार्थ न किया कितने पक्षपात को दर्शाता है । अस्तु यहां पर एक वात और हुई येभी लिखदेनी आवश्यक है। वातोंही वातोंमें न जाने क्या सोचकर विद्वद्वर आर्यमुनिजी महाराज निर्जर गिरामें वोलउठे। जिसका जवाव देववाणी में ही हमारे जगत्प्रसिद्ध न्यायदिवाकर पं० पन्नालालजी ने इस धीरध्वनि से दिया जिससे

उपस्थित सभा मण्डली चकित होगई। और उसका परिणाम हम एकतरह से लिखना योग्य नहीं समझते। पाठक स्वयं अनुमानकरें अस्तु सम्पादक महाशयके लेखानुसार मेवारामजी और वहुत से महाशयों सहित आर्य विद्वान मान्यवर रायवहादुर नत्थीमलजी के यहां गये। और उभयपक्ष की तरफ से कहागया कि आप राजकीय आज्ञा दिलादें। उसपर मान्यवर ने विद्वद्वर आर्यमुनिजी महाराज से कहा कि आपकी राय में जैन मेले के अवसर पर जिलाधीश को दरख्वास्त देनी ठीक है। और क्या वो मंजूर करलेंगे। पूर्वोक्त विद्वद्वर ने फरमाया कि कदापि नहीं और पं० मुरारीलालजी ने शायद येभी कहा कि आर्यमहाशयों का राजकीय आज्ञा के वास्ते विज्ञापन में लिखना विलकुल भूलहै। यह वात उक्त पं० जी ने श्रीमान् जानकीप्रसाद जी के यहां ता अवश्य अवश्य कईवार कही थी॥ अस्तु मान्यवरने फरमाया जव आप कहतेहैं दरख्वास्त देनीठीक नहीं और हुकुम न मिलेगा तो इस वक्त शास्त्रार्थ कैसे होसका है। हां अगर ये वात आर्यमहाशयों की तरफसे नोटिस में न लिखी जाती तो मैं अवश्य मध्यस्थ वनकर शास्त्रार्थ करादेता। अव मैं इन्हीं मेले के दिनोंमें या महीने पन्द्रहरोज वाद जिलाधीश से जुवानी पूछ आप लोगों को खवर देदूंगा शायद वो मंजूर करलें॥ तिसपर विद्वद्वर ने कहा वहुत ठीक है। उसी समय मेवारामजी ने विद्वद्वर आर्यमुनि जी महाराज व मान्यवर रायवहादुरजी से प्रार्थना की कि जव ये शास्त्रार्थ इसवक्त मुलतवी होता है तो विद्वद्वर आर्यमुनिजी से घंटे दो घंटे तत्त्वविषयपर यहीं मेरा विचार होजाय। विद्वद्वर जी ने कहा इस मौकेपर नहीं फिर कभी होगा। मेवारामजी ने पुनः प्रार्थना की कि आपका आगमन कव कव होगा इसवक्त नहीं तो कल किसी वक्त श्रीमान् जानकी प्रसादजी के यहां थोडी वहुत देर वाग्विलास अवश्य होवा चाहिये। उत्तर मिला कि सव जगह शोर होजाइगा और पूर्वोक्त श्रीमान् के मकान में वहुत जनता एकत्रित होजाइगी॥ ये उत्तर मिलनेपर पं० मेवाराम जी ने समझलिया कि अव कुछ न होगा निराश हो बैठरहे। इस वातकी साक्षी यदि किसी को लेनी हो तो रायवहादुरजी से पत्र द्वारा पूछलें और रायवहादुर

जी ने सभामण्डप में प्रसंग वस सहस्रों मनुष्यों के सन्मुख कहभी दिया था जिस का खुलासा आगे होगा। अस्तु जैन विद्वानों का और सहस्रों जैनभाइयों का उत्साह जो दूर दूर से शास्त्रार्थ सुनने आये थे मिट्टी में मिलगया और मेले में उदासी छागई। पाठक इस मेलेकी तयारी शास्त्रार्थ की वजहसे ही वडे समारोह के साथ हुई थी यह कौन जानता था कि आर्य मंत्री महाशय महीनों पहले कागज के घोडे दौडा समयपर टकासा जवाव दे अलग होजायगे। जैनसम्प्रदाय सिवाय सन्तोष के इस समय क्या करसक्तीथी। पाठक आर्यमित्र हाथ में ले हमारी इस पुस्तक से मिलान कीजिये हमारे लेखानुसार आर्यमित्र के लेखमें अवश्य परस्पर विरोध मिलैगा। लेकिन इसमें सम्पादक आर्यमित्र महाशय का कुछ दोष नहीं है यह प्रणाली तो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के समय से ही चलीआती है देखिये सत्यार्थप्रकाश। अस्तु अव सुनिये आगे की कथा जिसको सम्पादक महाशयजी गड़प सड़प करगये। मेले के दूसरे रोज मगसिर वदि ७ ता० ८ नवम्बर को मान्यवर रायवहादुर जीने जिलाधीश से जो उसी दिन खुर्जे में मान्यवर रायवहादुर जी के स्कूल के वोर्डिंगहौस की नीम धरने पधारेथे शास्त्रार्थ की वावत जैन मेले के द्वारपर ही सहस्रों मनुष्यों के समक्ष जिकर करदिया। और आशा हुई कि शायद जिलाधीश महोदय उभयपक्ष की दरख्वास्त को मंजूर करलें। फिर क्या था आम पवलिक में ये बात फैलगई कि राजकीय आज्ञा भी होगई। और रायवहादुर जी ने जैनियों से कहा कि आप आर्यमहाशयों को खवर करदो कि शायद उभयपक्ष की दरख्वास्त पर हुकुम होजाइगा चलो दरख्वास्त देदें। क्योंकि मैंने आर्यविद्वानों से खवर देदेने का वाइदा करलिया है। और मैंभी आर्यमहाशयों से जुवानी कहदूंगा। उसीवक्त करीव पांच वजे सन्ध्या के खुर्जे के आर्य मंत्री महाशय को निम्न लिखित पत्र लिखा गया॥ और रायवहादुरजी ने भी वादमें श्रीमान् हरिप्रसाद जी वजाज व रामलालजी महोदय से कहदिया कि आप लोग अपने विद्वानों को खवर करदीजिये और दरख्वास्त देदीजिये॥ मैंने आप के मंत्री जी को भी जैनसम्प्रदाय से लिखवा दिया है॥

नकल चिट्ठी   ॥ श्रीः ॥

श्रीमान् मंत्री आर्यसमाज खुर्जा जयजिनेन्द्र आज शाम के ४बजे जिला मजिस्ट्रेट साहेब से मुबाहसे की बाबत अर्ज किया गया था उम्मेद है कि वह दोनों फरीकेनों की दरख्वास्त होनेपर शास्त्रार्थको मंजूर करलेंगे अब आप से प्रार्थना है कि ता० ११-११-१९०६ ई० को मजिस्ट्रेट साहेब के यहां चलकर दरख्वास्तदें और तमाम नियम तै करलिये जांय नियम क्या हैं जी यही तो एक नियम था जिस का निवटेरा जिला मजिस्ट्रेट साहबने अपनी महती कृपा दिखाकर पूरा करदेने की इच्छा प्रगट की है आशा है कि मंत्री आर्यसमाज अब इस कार्य में किंचित् भी विलम्ब न करेंगे बस अब क्या है नियम नियत हो ही चुका है ता० १२-११-१९०६ ई० से शास्त्रार्थ शुरू होजाय ॥ समाप्तम् ॥   ८—११—०६

निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १ जैनसभा खुर्जा

पाठक इस पत्र का उत्तर अभीतक नहीं मिला। विचारिये तो सही आर्य मंत्री महाशय को ऐसा चाहिये था कुछ तो उत्तर देकर जैनियों के चित्तको सन्तोष देना। यदि शास्त्रार्थ करना नहीं चाहते थे तो पहले इतना प्रयास क्यों उठाया॥ अब हमक्या लिखें पाठक स्वयं विचारें इस पत्रका प्रत्युत्तर न देना आर्य मंत्री महाशय के अन्तःकरण को कैसा प्रगट करता है। और किसकी पक्ष निर्बल मालूम होती है। और सम्पादक आर्यमित्र महाशयजी व सम्पादक वेदप्रकाश महाशयजी से पूछजाय कि निष्पक्ष महोदयजी इस चिट्ठी के छापने के लिये क्या आपके पास स्याही कागज नहीं रहा था॥ या प्रेसकी मशीनमें कुछ फरक आगया था। या पक्षपात के आवेशने जबरन आप की लेखनी रोकलीथी॥ वैसे तो ये हमारे सम्पादक महाशयों की प्राचीन प्रणाली है। पहले भी आर्यमित्र ता० २४ अक्टूबर में जैनियों की तरफ का तो विज्ञापन छापचुके हैं॥ और जैनियों के विज्ञापन से पूर्व जो आर्यमहाशयोंने विज्ञापन दिया है वो नहीं छापा जैसा कि इस पुस्तक के प्रारम्भ में आपको मालूम होगा अस्तु महाशय येतो वो मसल हुई कि खट्टे खट्टे थू और मीठे मीठे

गप्प। लेकिन महोदयवर याद रखिये दिवाकर प्रक्षिप्त धूलि निज मुखारविंद को ही अलंकृत करती है। पाठक अब सुनिये ९ तारीख की राम कहानी सभा मण्डप में महोपदेशक पं० कल्याणरायजी व मेवारामजी के उत्तम व्याख्यान देने के बाद पं० श्रीलालजी नियोग और विधवा विवाह खण्डनपर व्याख्यान देने लगे। और जब उक्त पंडितजीने ग्यारह पति करने की आज्ञा सत्यार्थप्रकाश में बताई तो तीन चार भगवां वस्त्रधारी सन्त और दोचार अन्यनगरस्थ जंटिल- मैंन बड़े आवेश में भरगये और कहने लगे कि ग्यारह पति करना कहां लिखा है बताइये। उसीवक्त मेवारामजी ने सत्यार्थप्रकाश नि- कालकर दिखादिया। और महाशयों को मौनधारण करना पड़ा। पूर्वोक्त महात्माओं को कब चैन पडता था थोड़ी देर बाद फिर क्रोधाकृति से कहनेलगे कि हमारे विद्वान चलेगये जब जैनीलोग आज खण्डन करने लगे हैं। पहले तो रायबहादुरजी से हमारे वि- द्वानों के सामने शास्त्रार्थ की मनै करादी फिर कल एक चिट्ठी लिखकर भेजदी इन चालों से क्या होता है। आर्यमहाशयों की ऐसी बात सुनकर रायबहादुरजी जो उस समय सभामण्डपमें उपस्थित थे खड़े होकर कहने लगे जोकि आर्यमहाशयों ने मेरा नाम लिया है इससे मुझको अब बात कहनीपडी मेरी जो बात हुई है उस में एक अक्षरभी झूठ नहीं बोलूंगा। मैं ऐसा अधर्मी नहीं हूं जो किसी की पक्षसे झूठ बोलूं। मैं पास जातेही मैंने पं० आर्यमुनिजी से कहा कि आपलोगों की तरफ से राजकीय आज्ञा प्राप्त करने का नोटिस नहीं निकलता तो मैं आप मध्यस्थ बनजाता। अब बिना जिलाधीश के पूछे नहीं बनसकता। और उभयपक्ष की तरफ से या एकपक्ष की तरफ से इस समय दरख्वास्त देना आपकी समझ में आता है या नहीं और जिलाधीश के मंजूर करने की सम्भावना है या नहीं॥ आर्यमुनिजी बोले नहीं है। रायबहादुर जी ने फिर कहा तो अब शास्त्रार्थ कैसे हो॥ जिलाधीश इसी जगहपर हैं या तो मैं इसी अब सरपर या महीने पन्द्रहरोज बाद उनसे पूछकर आर्यमहाशयों को खबर देदूंगा॥ आर्यमुनिजी बोले ये बहुत ठीक रहा॥ पीछे अ- त्यन्त प्रेमसे शास्त्रार्थ होगा। यों शास्त्रार्थ मुल्तवी हुआ। मैंने या जैन

सम्प्रदायने नाई नहीं की आप उपस्थित आर्यमहाशयों का कथन सर्वथा ठीक नहीं है। आपलोगों को क्या मालूम वल्कि मेवाराम ने कईदफै उदास होकर कहा कि यदि शास्त्रार्थ न होगा तो हमको अपने अन्य नगरस्थ जैनीभाइयों में बडी शर्मिंदगी उठानी पडैगी क्योंकि हम अपने मेले की चिट्ठी में सर्व भाइयों को विचार होने की सूचना देचुके हैं आप किसी तरह से वन्दोवस्तकर शास्त्रार्थ करादीजिये॥ तिसपर मैंने उससे कहा कि तुमलोग परिपाक कुछ नहीं सोचते क्या मुझको किसी आफत में फसाना चाहते हो तिस पर मेवाराम ने कईदफै कहा कि इस समय शास्त्रार्थ मुल्तवी होता हैतो विद्वद्वर आर्यमुनिजी महाराज का आगमन कव कव होगा इस समय या कल विद्वद्वरजी से यहां या श्रीमान् जानकीप्रसाद् जी के मकानपर मेरा तो विचार होही जाना चाहिये। तिसपर आर्यमुनि जी वोले इसवक्त होना किंतेही ठीक नहीं है जनता में कोलाहल हो जाइगा। मेवाराम सुनकर चुपहोगये। फिर पं० मुरारीलाल जी ने कहा कि आर्यसमाज खुर्जा इतना धनी नहीं है जो फिर विद्वानों को बुलासकै। मने कहा विद्वानों के आगमन व्ययकी चिन्ता न कीजिये सब होजाइगा। इस में एक अक्षरभी झूंठ नहीं है इत्यादि॥ फिर मेवारामजी ने कहा भाइयों उपस्थित आर्यमहाशयों को वे शिर पैरकी वात कहनी योग्य नहीं है॥ यदि उपस्थित आर्यमहाशय हमारे विद्वानोंके व्याख्यानोंमें शंका समाधान करने की शक्ति रखते हैं तो सम्मुख खडे होजांय। नहीं तो इसी वक्त मध्यस्थादि मुकर्रर करके जिलाधीशको दरुख्वास्त देने चले चलें। यदि उपस्थित महाशयों को अधिकार नहीं है तो खुर्जास्थ समाज के मंत्री महाशय से जाकर कहें॥ हमतो महाशयजी को पत्रद्वारा सूचना देही चुके हैं अभीतक प्रत्युत्तर में शून्य लब्ध है। और यदि आप कुछ नहीं करना धरना चाहते तो वृथा कोलाहल कर सभा को क्षोभित न कीजिये॥ और मेवारामजी ने सहस्रों मनुष्यों के समक्ष येभी कहा था कि पुनः आपके विद्वानों के आगमनमें जो व्यय होगा उसके देनेके लिये उदार रायवहादुर महोदय ने तो कहही दिया है परन्तु जैन-सम्प्रदायभी सर्व तथा सम्पन्न है कुछ निर्धन नहीं है आर्य विद्वानों

की आगमन व्यय से सेवा करने में पीछे कदम न रक्खेगी ॥ इसपर सब सभा सुप्रहोगई और फिर श्रीलालजी ने उत्तम व्याख्यान दे उदार वक्तता का पूरा परिचय दिया। पश्चात् महोपदेशक पं० कल्याणराय जी ने अद्भुत छटासे उपस्थित मान्यवरों को धन्यवाद दे सबका मनमोहा ॥ और सभा जयध्वनि के साथ विसर्जन हुई पाठक अब देखिये आर्यमहाशयों के शास्त्रार्थरूपी गोलमोल ढोलकी खोल उतारकर पोलही पोल है या और कुछ गोल गपोल। अब हमारी समस्त धर्मानुरागी विद्वानों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को पूर्वा पर देखकर सत्यासत्य का निर्णय करलें। यों तो पत्र लेखनी अपने घरकी होने से आर्यमहाशय कुछ न कुछ प्रत्युत्तर लिखेहींगे। परंतु उसमें युक्तायुक्त का विचार करना विद्वान पुरुषों ही का काम है ॥ और हमारी येभी प्रार्थना है कि इस पुस्तक लिखित वार्ताओंमें कुछ सन्देह हो तो पत्रद्वारा या स्वयं आकर मान्यवर रायबहादुर नत्थी मलजी व श्रीमान् आनरेरी मजिस्ट्रेट जानकीप्रसादजी से निर्णय करलें। क्योंकि बहुतसी वातें इन दोनों महान पुरुषों के समक्ष हुई हैं पूर्वोक्त महानुभावों के कथनपरही उभयपक्ष का वलावल निर्णय कीजिये और हमारी कोईवात असत्य निकले तो निर्णयार्थ आयेहुये पुरुषों का व्यय जैनसम्प्रदाय देगा अन्यथा वो भुगतें और यदि कोई छापेकी भूल से या प्रमादवश शब्द या वाक्यरचना में भूल रह गई हो तो सज्जन जन क्षमाकरें। मैं ने ये पुस्तक किसी द्वेष भावसे नहीं लिखी है प्रत्युतः अन्यनगरस्थ हमारे भाइयों के सैकड़ों पत्र शास्त्रार्थ का हाल पूछने को आये और नोटिसों को पुस्तकाकार छपाने की प्रेरणा कीगई ॥ और आर्यमित्र पत्र के लेखका सत्यासत्य निर्णय होजाय अतः मैंने पं० मेवारामजी मन्त्री जैनसभा खुर्जा की सहायता से ये पुस्तक छपाकर प्रकाशित की आशा है कि हमारे आर्यभाई भी इसको पक्षपात त्याग सम्यक्तया अवलोकन करेंगे। और इसके सन्दर्भ पर विशेष ध्यान देंगे। ऐसा न होकि पुस्तक निर्माता के, लेखाशय को न समझ द्वेषबुद्धि धारण करलें ॥ यदि इस पुस्तक से हमारे भाइयों को कुछभी लाभ होगा तो अपना श्रम सफल समझूंगा

॥ विशेष प्रार्थना ॥

किसी कवि के (गतंन शोचामि कृतंन मन्ये) इस वचनानुसार धर्मानुरागी आर्यमहाशयों से निवेदन है कि अब वो अपने वचनानु सार इस तत्त्वविषय के शास्त्रार्थ को जिस समय अवकाश समझें स्नेह पूर्वक तत्त्व निर्णय के आशय से अवश्य करें ॥ हमतो सब में अच्छा ये समझते हैं कि खुर्जा नगस्थ कोई प्रधान पुरुष इस भार को अपने ऊपर लेकर उभयपक्षकी तरफ से जिलाधीश को दरख्वा स्त दिलादे या जरूरत न समझे तो न दिलावे ॥ शांति और कडे शब्द न बोलने का प्रबन्ध स्वयं करे ॥ मध्यस्थ आत्मबलिक रहें ॥ और जिस श्रीमन्तके ऊपर हमारी और आर्यमहाशयों की दृष्टिहै वो प्रधान महानुभाव ये सब कार्य सम्पादन करसक्ता है और प्रकर- णांतर में जाते हुए उभयपक्ष के विद्वानों को रोकने की भी बुद्धि रखता है ॥ परंतु उक्त श्रीमान् को ये अवश्य सोचना चाहिये कि धर्म में श्रम अवश्य होता है । और अपना कुछ कार्यभी छोडना पड ता है । और जभी कुछ यशोलाभ भी होता है । अतः आशा है कि पूर्वोक्त श्रीमान् कुछ खयाल न कर इस कार्य को हर्षपूर्वक स्वीकार करेंगे । अतः हमारे गम्भीरधीधारी विद्वद्वर आर्यमुनिजी, शांतिरस विहारी पं० तुलसीरामजी स्वामी, शास्त्रार्थभर भारी खुर्जा आर्य मंत्री महाशयजी से प्रार्थना है कि सत्यनिर्णयार्थ जैनधर्मावलम्बी विद्वानों के हृदय में उठीहुई शास्त्रार्थ लता का सेचनकर धर्मोत्साह की वृद्धि करें देखें पूर्वनिर्दिष्ट सत्यधर्म निर्णयेच्छु उभयपक्ष के दिल में समायेहुए हमारे श्रीमान् आनरेरी मजिस्ट्रेट जानकीप्रसाद जी मौनामृत पी शयनागारको ही अलंकृत करते हैं या मध्यस्थ बन सत्यधर्म निर्णयार्थ आगे कदम धरते हैं । इसकी बावत किसी भाई को पत्र व्यवहार करना होतो निम्न लिखित पते से करे ॥

जयनरायन रानीवाले, उपमन्त्री नं० १ जैनसभा, खुर्जा

॥ विशेष द्रष्टव्य ॥

हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणो मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः।
सुदुस्तरं तत्सुकृताद्धिलभ्यते यदौषधं स्वादु च रोगहारि च ॥१॥

इस शास्त्रार्थ के मूलकारण का उद्बोधक व्याख्यान जो पं० मेवा रामजी ने रामलीला में दिया था उसमें जैनसिद्धांत से सनातनधर्मा वलम्बियों के सिद्धांत का घनिष्ट सम्बन्ध समझ शुद्धांतःकरण से मूर्तिमण्डनादि किया था। कोई आक्षेप सनातनधर्मावलम्बियों पर नहीं किया। परन्तु कलह कौतुकी नारदमहाशयों के वहकाने या किसी खास वजह से (जिसका लिखना इस जगह उत्तम नहीं सम झाजाता) हमारे कुछ एक सनातनधर्मी भाइयों ने विपरीत अर्थलगा परस्पर में चर्चा करनी प्रारम्भ की। किसी ने कहा मेवारामजी ने हमारे वेदों को बुरा बताया। किसीने कहा मेवारामजी ने अपनेको हम शब्द बोला किसीने कुछ कहा किसी ने कुछ अवतो वे बीज वृक्ष तयार होनेलगा। अस्तु भाइयों जरा सत्यके सहारे विचार कीजिये जो मनुष्य किसी के कैम्प में उससे एकता दिखाने की प्र- तिज्ञा कर व्याख्यान देनेको खडा हो उसका काटकरै उस पुरुष के समान विश्वासघाती और कौन होगा। मेवारामजी को क्या गरज पड़ी थी जो सनातनधर्मियों की सभा में उन्हीं का काट करते॥ अगर उनको प्रत्याख्यानही करना होता तो और जगह वहुतेरी थी उन्हों ने तो प्रत्युतः अपने जैनभाइयों की नाराजी सह कतिपय सना तनधर्मी प्रधानपुरुषों के आग्रह से व्याख्यान दियाथा। अस्तु भाइयों पं० मेवारामजी जो सनातनधर्म को एक प्रकार से अच्छा समझते हैं उसको आपलोगों के भडकाने से बुरा तो न वतावेंगे परन्तु अव वो सनातनधर्मावलम्बियों की तरफ से मध्यस्थ भाव धारण करते हैं। क्योंकि जिस प्रयास का विपरीत फल हो उससे बुद्धिमानों को अलगही रहना चाहिये। प्यारे भाइयों परस्पर प्रीति के वृक्षको मूल से उखाड के करमल पछताना होगा। जिसने कुछ किया है एकता ही से न कि फूट से। अव हम प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बियों से प्रार्थना करते हैं कि वो आजकी मिती और हमारे इस लेखको नोट

करलें कि आज से दस वर्ष बाद इस खुर्जे नगर में दशगुने आर्य बढ़जाईंगे। यदि और भी जियादा होजांय तो कुछ आश्चर्य नहीं। और कितने मंदिरों में ताले लगते हैं। अन्यथा विद्योन्नति की तरफ ध्यान दीजिये। सबसे लड़ाई कर और विद्याभ्यास न कर धर्म की रक्षा चाहना गगनकुसुम पर मन डुलाना है। अन्त में हम अपने मान्यवर महोदय रायबहादुर जी से साविनय प्रार्थना करते हैं कि जिस अच्छे कार्य करने से उल्टा नुकसान दीखे ऐसे व्याख्यान दिवाने को हमें विशेषतया बाधित न किया करेंगे। मैंने ये लेख किसी द्वेषभावसे नहीं लिखा है बल्कि विपरीत परिणाम के रोकनेके लिये। इतं विस्तरेण॥

निवेदक जयनरायन उपमंत्री नं० १

जैनसभा खुर्जा

॥ नोट ॥

समस्त धर्मावलम्बी भाइयोंसे प्रार्थना है कि इस पुस्तक के चाहने वाले लखों भाई हैं। और इतनी प्रतियों का छपना असुगम बात है। अतः जिस नगर में इसकी दो चार प्रति पहुंचजांय वहां के भाई पढ़कर एक दूसरे को देदें यदि विशेषही आवश्यकता हो तो पूर्वोक्त पते से पत्र भेजें जहांतक मुमकिन होगा भेजेंगे। सर्व साधारण के हितार्थ इस पुस्तक का मूल्य कुछनहीं रखा गया है॥

शुभं भूयात्